

अप्रैल २०१२

दादावाणी

मूल्य: ₹ १०



ये मन, वाणी और वर्तन, जो डिस्चार्ज होते रहते हैं, उसे 'हमें' देखते रहना है, 'हमें' तो 'चंदुभाई' (फाइल नं. 1) क्या कर रहे हैं, उसे देखते रहना है। प्रकृति को देखता रहा वह पुरुष!

तंत्री तथा संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : ७, अंक : ६
अखंड क्रमांक : ७८
अप्रैल २०१२

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ. : अडालज,
जि. : गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Editor : Dimple Mehta
सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

प्रकृति से अलग रह सकते हैं ऐसे

संपादकीय

जड़ और चेतन, दो तत्वों के इकट्ठे होने से विशेष परिणाम उत्पन्न हुआ। उस विशेष परिणाम का प्रतिष्ठित स्वरूप अर्थात् पुद्गल। उसे प्रकृति कहा और अंदर आत्मा खुद पुरुष के तौर पर अलग ही है। पुरुष वह आत्मा और देह वह प्रकृति।

अज्ञानता में, यानी जब तक 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का भान नहीं हुआ है, तब तक पुरुष और प्रकृति तन्मय रूप ही बरतते हैं और 'मैं हूँ' और 'मैं करता हूँ' के कर्ता भाव से, अगले जन्म की प्रतिष्ठा होती रहती है। आत्मज्ञान की प्राप्ति के बाद, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का भान होता है। पुरुष और प्रकृति अलग हो जाते हैं। खुद पुरुष पद में रहकर प्रकृति से भिन्न रहकर बरत सकता है। वैसे तो दोनों भिन्न ही हैं किन्तु पूर्व के अभ्यास के कारण खुद पुरुष, प्रकृति से अलग नहीं रह सकता। और इसी कारण आत्मा के आनंद का अनुभव नहीं कर सकता। तो अब प्रकृति से अलग रहने का उपाय क्या है? जागृतिपूर्वक आज्ञा पालन।

ये ज्ञान मिलने के बाद प्रकृति अलग हो गई, किन्तु डिस्चार्ज के तौर पर तो रही है। पहले जो चार्ज हुई थी वो डिस्चार्ज होती रहती है। और वो डिस्चार्ज, स्वभाव से हो रहा है। अपना ये अक्रमविज्ञान क्या सूचित करता है, कि ये प्रकृति जबरदस्ती जो करवा रही है उसे तुम जानो और प्रकृति से अलग हो जाओ। अब आप चंदूभाई (फाइल नं. १) के ऊपरी हो। चंदूभाई व्यवस्थित के ताबे में हैं और व्यवस्थित की प्रेरणा के अनुसार वह लट्टू की तरह घूमते रहते हैं। 'हमें' उसे अलग रहकर देखना है। चंदूभाई के उदय में एक नहीं हो जाना है। 'ये मुझे हो रहा है' या 'मुझे ऐसा क्यों हो रहा है', ऐसी झंझटों में नहीं पड़ना है।

अब व्यवहार निकाली है। व्यवहार ड्रामेटिक करना है और कदाचित् दूसरों को दुःख हो ऐसा व्यवहार हो जाए तो चंदूभाई से कहना है कि, 'ऐसा करना पुसाएगा नहीं, ऐसा नहीं करना चाहिए।' और उनके पास ही अतिक्रमण के प्रतिक्रमण करवाने हैं, ताकि सब चोखा हो जाए।

प्रकृति से अलग हुए यानी खुद पुरुष पद में आ गए। और पुरुष होने के बाद ही सच्चा पुरुषार्थ शुरू होता है। पुरुषार्थ यानी क्या? तो कहे, प्रकृति में तन्मय नहीं हो जाना है और प्रकृति के ज्ञाता-दृष्टा रहना है। उदय में चंदूभाई तन्मयाकार हों किन्तु 'खुद' उसमें तन्मय नहीं हो तो तब वहाँ तप होता है। तप से जागृति अनुभव में परिणमित होती है। और इस तरह पुरुषार्थ करते-करते खुद पुरुष में से पुरुषोत्तम पद तक पहुँच सकता है।

प्रकृति-स्वभाव को निहारे उसे ज्ञायकता कहते हैं। प्रकृति ज्ञेय और खुद ज्ञाता। बस, प्रकृति को निहारते ही रहना है। प्रकृति को निहारे वह पुरुष और प्रकृति को निहार लिया वह परमात्मा, फिर उस पद में, खुद ज्ञाता-दृष्टा और परमानंदी निरंतर रहता है।

अब ऐसी दशा की प्राप्ति होना वो अपना ध्येय है। और उस ध्येय की पूर्णता के लिए पुरुषार्थ की समझ प्रस्तुत संकलन में पेश की गई है, जो सभी को पुरुष पद में स्थित होकर पुरुषार्थ करने के लिए सचोट मार्गदर्शन प्रदान करेगी।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

प्रकृति से अलग रह सकते हैं ऐसे

ज्ञान मिलने के बाद प्रकृति डिस्चार्ज

प्रश्नकर्ता : आत्मा राग-द्वेष रहित है कहा, तो प्रकृति राग-द्वेष रहित कैसे होगी? कब होगी? उसका क्रम क्या है?

दादाश्री : स्थूल प्रकृति राग-द्वेषवाली है ही नहीं। वो तो पूरण-गलन स्वभाव की है। ये तो अहंकार राग-द्वेष करता है। जो उसे पसन्द है उस पर राग करता है और पसन्द नहीं है तो द्वेष करता है। प्रकृति तो अपने स्वभाव में है। सर्दी के मौसम में ठंड होती है या नहीं होती?

प्रश्नकर्ता : होती है।

दादाश्री : ठंड उसे पसन्द नहीं आती तो उसे द्वेष होता है। कई लोगों को ठंड में मज़ा आता है। नहीं आता?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही बात है।

दादाश्री : ऐसा है। प्रकृति को सर्दी के मौसम में ठंड लगती है, गर्मी के मौसम में गर्मी लगती है। यानी ये सारे राग-द्वेष अहंकार करता है। अहंकार जाए मतलब राग-द्वेष गए।

प्रश्नकर्ता : यानी इस ज्ञान के बाद प्रकृति ओटोमेटिक (अपनेआप) सहज होती ही रहती है न?

दादाश्री : हाँ, ज्ञान मिलने के बाद प्रकृति अलग हो गई किन्तु डिस्चार्ज के रूप में बाकी रही। वो धीरे-धीरे डिस्चार्ज होती रहती है। जो चार्ज हो

गई है वो डिस्चार्ज होती रहती है। (जीवित) अहंकार के बिना डिस्चार्ज होती ही रहती है, अपनेआप ही। उसे हम ‘व्यवस्थित है’ कहते हैं।

डिस्चार्ज हो रहा है स्वभाव से

प्रश्नकर्ता : किन्तु यहाँ (ज्ञान मिलने के बाद) अहंकार करे तो चार्ज नहीं होता?

दादाश्री : नहीं। अहंकार किसे कहते हो? ये ज्ञान मिलने के बाद अहंकार नहीं होता। अहंकार होना, वो तो खत्म हो गया है। ये तो क्लियर (साफ) डिस्चार्ज है।

कई लोगों को मन में ऐसा लगता है कि, ‘ये मुझे अहंकार तो नहीं हो रहा न?’ मैंने कहा, ‘नहीं हो रहा, अहंकार कैसे होगा? मुझसे पूछे बिना तुम अहंकार कैसे कर पाओगे? अहंकार करने के लिए तुम्हें मुझसे पूछना पड़ेगा, चाबी मेरे पास है।’

प्रश्नकर्ता : किन्तु दादाजी, ठीक चाबी नहीं दी हो तो?

दादाश्री : नहीं, वो तो जैसे भी दी हो तो भी चलेगी। उसने गलत दी हो, तो भी मैंने खींच ली है। इसलिए कहता हूँ न कि, ‘भाई, निर्भय रहना, सिर्फ मेरी आज्ञा में रहो, और कुछ नहीं।’ मुझे और कोई झंझट नहीं है। मेरी आज्ञा में रहो, फिर यदि अहंकार हो तो उसका हर्ज नहीं है।

डिस्चार्ज स्वभाव से हो रहा है। पानी गरम

करना, उसे चार्ज करना कहा जाता है। और फिर उस गरम पानी की टंकी को ठंडा करना हो, तो हमसे कोई पूछे कि, 'साहब, इसके लिए मुझे क्या उपाय करना है?' तब कहे, 'कुछ नहीं, तुम सो जाओ, वो स्वभाव से अपनेआप ही ठंडा हो जाएगा।' डिस्चार्ज का मतलब हम ऐसा कहना चाहते हैं।

डिस्चार्ज की गलती कभी भी नहीं निकालते

अर्थात् इस दुनिया में सबकुछ डिस्चार्ज है। अब डिस्चार्ज की गलती निकालनी, उसमें कोई स्वाद नहीं आएगा। डिस्चार्ज की गलतियों के कारण ही तो ये जगत् खड़ा रहा है। आप जिसे परिणाम कहते हो, जगत् उसे कॉज्जेज कहता है, और इसी वजह से जगत् उलझ रहा है। 'ये आपने ही किया' कहेंगे, और आप कहते हो कि 'नहीं, ये परिणाम है, ये डिस्चार्ज है।' इसलिए आपको भय नहीं है। आपके डिस्चार्ज उसे कॉज्जेज लगते हैं, और कहेगा, 'ऐसा वर्तन क्यों करते हो?' अरे, हमें भय नहीं लगता तो तुम्हें किस बात का भय लगता है? और यदि भय लगे, तो वो भी दादा को भय लगेगा कि 'ये सारे मेरे फोलोअर्स (अनुयायी) ऐसे क्यों हैं?' किन्तु मैं तो जानता हूँ कि ये जो भरा हुआ माल है वो ही निकल रहा है। नया कहाँ से लाएगा?

किसीको भी नहीं छोड़ती प्रकृति

ये दुनिया प्रकृतिवश है। ये सबकुछ सभी को प्रकृति जबरदस्ती करवाती है और खुद जबरदस्ती करता है। हमें नहीं करना हो फिर भी करवाती है। अपना विज्ञान ये सूचित करता है कि ये प्रकृति जबरदस्ती जो करवा रही है उसे तुम जानो और प्रकृति से अलग हो जाओ। किन्तु, 'ये प्रकृति मैं हूँ, ये जो कर रहा है वो मैं ही हूँ' ऐसा देहाध्यास छूट जाए उसके लिए है यह। वर्ना, पूरे जगत् को तो प्रकृति जबरदस्ती नचाती है।

प्रकृति नचाएँ जैसे नाचे

प्रकृति यानी 'सरकमस्टेन्शियल एविडन्स।' ये तो प्रकृति जैसे नचाएँ जैसे नाचता है और कहता है कि 'मैं नाचा, मैंने त्याग किया।' प्रकृति में त्याग हो तो ही त्याग कर सकते हैं। वर्ना, त्याग लिया हो तो भी पत्नी (वहाँ आकर) खींचकर वापस वहीं ले जाती है।

प्रकृति का अंत आएँ ऐसा नहीं है। यदि खुद पुरुष (आत्मा) हो जाएँ तो प्रकृति, प्रकृति का काम करती है और पुरुष, पुरुष के भाग में रहता है। पुरुष यानी परमात्मा। जब तक पुरुष नहीं बनता तब तक जैसे प्रकृति नचाएँ जैसे नाचता रहता है।

ये तो अनंत जन्मों से बुरी आदत पड़ गई है, अटकण (जो बंधनरूप हो जाएँ, आगे नहीं बढ़ने दे) पड़ गई है, इसलिए प्रकृति सवार हो जाती है। किन्तु आत्मा वैसा नहीं है। प्रकृति खुद कहती है कि, 'भगवान, आप ऊपर बैठो।' किन्तु ये समझ में नहीं आने के कारण प्रकृति को सिर पर बिठाता है।

आत्मा और प्रकृति, दोनों जैसे हैं अलग, किन्तु दोनों नजदीक होने के कारण अनादिकाल से ऐसे चिपकें हैं कि उखड़ते ही नहीं। इसलिए दोनों के स्वभाव में 'एकता' लगती है। 'मैं मर जाऊँगा', आत्मा को भी ऐसा लगता है। एक हो गएँ हैं न! अरे, तुम कैसे मरोगे? किन्तु उसे 'स्वभाव एकता' हो गई है।

सर्वस्व परवश ही है प्रकृति। श्री हन्ड्रेड एन्ड सीक्सटी (360) डिग्री से ही परवश है। लोग सिर्फ अहंकार करते हैं, उतना ही है। 'मैं ऐसा कर डालूँ और मैं वैसा कर डालूँ', ऐसा अहंकार करता है, उतना ही।

प्रकृति है परिणाम में स्वतंत्र

प्रश्नकर्ता : प्रकृति यदि पूरी तरह स्वतंत्र नहीं है तो किस पर आधारित है?

दादावाणी

दादाश्री : नहीं, परिणाम में स्वतंत्र है। जन्म से लेकर मरने तक सब परिणाम कहलाता है, वो स्वतंत्र है। उसमें प्रकृति स्वतंत्र है, अपना कुछ नहीं चलता। किन्तु अंदर जो कॉजेज बंध रहे हैं वहाँ अपना चलता है। उसमें हमें यदि थोड़ा-बहुत फेर-बदलाव करना हो, तो हो सकता है। वो भी संपूर्ण तो नहीं कर सकते। थोड़ा-बहुत फेर-बदलाव हम कर सकते हैं, जैसे कि किसी पर हमें कुदरती तौर पर बैरभाव आ रहा हो फिर भी भीतर हम तय करें, कि बैर बाँधकर हमें क्या फ़ायदा होनेवाला है! यानी इस तरह कॉजेज में अंदर परिवर्तन करने का राइट (अधिकार) है। इफेक्ट में राइट नहीं है। इफेक्ट तो एकजेक्ट (यथार्थ) आएगी ही।

नियम से आती है हर एक कोज की इफेक्ट

पूरी ज़िन्दगी यहाँ पर 'कॉजेज' खड़े (उत्पन्न) किए हों, आपके वो 'कॉजेज' कहाँ जाएँगे? और 'कॉजेज' किए हैं इसलिए वो आपको कार्य फल दिए बगैर नहीं रहेंगे। 'कॉजेज' खड़े किए हैं, ऐसा आपको खुद को समझ में आता है?

हर एक कार्य में 'कॉजेज' खड़े होते हैं। किसीने आपको नालायक कहा, तो आपको भीतर 'कॉजेज' खड़े होंगे कि, 'तेरा बाप नालायक है।' ये आपका 'कॉजेज' हुआ। आपको 'नालायक' कहता है, वो तो नियम के आधार पर कहकर गया और आपने उसे नियम के बाहर माना। आपकी समझ में ये नहीं आया? क्यों कुछ नहीं बोलते?

प्रश्नकर्ता : बराबर है।

दादाश्री : अर्थात् 'कॉजेज' इस जन्म में होते हैं, उसकी 'इफेक्ट' अगले जन्म में भुगतनी पड़ती है।

ज्ञान से बदलते हैं अभिप्राय

प्रश्नकर्ता : गीता में जब अर्जुन कहते हैं कि

'मैं नहीं लडूँगा', तब कृष्ण भगवान उससे कहते हैं कि, 'तेरे स्वभाव के अनुसार, तेरी प्रकृति के अनुसार तू लड़ने ही वाला है।'

दादाश्री : हाँ, उस प्रकृति के अधीन हुए बिना कोई रहता ही नहीं। कृष्ण भगवान भी अपनी प्रकृति के अधीन थे न! उसमें किसीका चलता ही नहीं न! प्रकृति किसीको भी नहीं छोड़ती! सिर्फ ज्ञान से अपना अभिप्राय बदल देते हैं। प्रकृति के अधीन राग-द्वेष हुए बगैर नहीं रहते, खुद का अभिप्राय बदल जाए, कि 'ये शोभा नहीं देता', तो छूट गया।

बिना जागृति के प्रकृति पकड़ में नहीं आती

प्रकृति के अधीन हुए बिना कोई रहता ही नहीं। तुम्हें ऐसा कोई अनुभव हुआ है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हुआ है न, दादाजी। स्नान करने के लिए पहले दौड़ना, ये सब यात्रा के समय ज़्यादा दिखता है।

दादाश्री : चढ़ने में, उतरने में, सभी में स्वार्थी। उसका इक्का अलग ही होता है।

प्रश्नकर्ता : उसकी नज़र उधर ही होती है, उसका लक्ष्य भी वहीं होता है।

दादाश्री : प्रकृति को ऐसा भले ही हो, किन्तु 'उसे' भी अच्छा लगता है, इसलिए अब तक तो 'उसे' इस बात का पता भी नहीं था। ये तो मैंने समझाया तब समझ में आया। ऐसा हर एक बार समझ में आना चाहिए कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसा क्यों होता है?' तो जो होता है वह प्रकृति, किन्तु आपको पता चलना चाहिए कि 'ऐसा क्यों होता है, ऐसा नहीं होना चाहिए।'

प्रश्नकर्ता : तो वह प्रकृति।

दादाश्री : हाँ। अभी भी स्नान करने के लिए क्यों उतावले हो जाते हैं, 'ज़ल्दी खाना खा लूँ', ऐसे

दादावाणी

क्यों उतावले हो जाते हैं, ये भान रहना चाहिए। नहीं रहना चाहिए? ऐसा भान नहीं रहा, उसी वजह से ये गलती हुई। भान रहेगा, तो प्रकृति को हुआ ऐसा लगेगा न! जैसी प्रकृति लाया है, उस तरीके से प्रकृति खुल रही है।

साढ़े छह बजे उठनेवाला, आज साढ़े पाँच बजे से ही क्यों इधर-उधर घूम रहा है। तब समझ जाना चाहिए कि मुआ स्वार्थी है। 'संडास जाकर आ जाऊँ, वर्ना ये लोग घुस जाएँगे।' ऐसा सब हमें पता चलता है न! स्वार्थी है, उसमें हर्ज नहीं है, किन्तु जागृति रहनी चाहिए। ये जो हो रहा है वो गलत हो रहा है। उसकी (फाइल नं-१) प्रकृति ऐसी है। प्रकृति नहीं भी दिखे, ऐसा सबकुछ भी है। धीरे-धीरे सत्संग में रहने से सेवाभाव से आगे बढ़ेगा।

भाव सत्ता से नया सुधारो

प्रश्नकर्ता : किन्तु प्रकृति के माल की पहचान करवा दें, तब वो पकड़ में आएगी न?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : उस प्रकृति की परतें जाएँ, तब जड़मूल से जाती है न?

दादाश्री : अपना विज्ञान तो सबकुछ समझा देता है कि ये लोभ आया, ये फलां आया....। क्योंकि अलग होकर अब देखनेवाला हुआ है न! यानी चंदूभाई का लोभ छूटता नहीं, किन्तु हमारी समझ में आ जाता है कि चंदूभाई का लोभ छूट नहीं रहा। इसलिए फिर हमें उन्हें उकसाना चाहिए न! समझा-बुझाकर पाँच-पच्चीस हजार रुपये कहीं (दान में) दिलवा देने चाहिए।

विज्ञान में नहीं होती कंट्रोल की सीमा

प्रश्नकर्ता : प्रकृति पर कंट्रोल नहीं आता। बाकी शुद्धात्मा भाव बराबर रहता है।

दादाश्री : कंट्रोल करना वो तो पुलिसवाले को सौंप देना है! प्रकृति पर कंट्रोल नहीं लाना है। कंट्रोल लाना तो शुभाशुभ मार्ग में होता है, आपकी प्रकृति पर अब कौन कंट्रोल लाएगा? आप मालिक नहीं हो। आप अब 'चंदूभाई' नहीं हो और जो करता है वो सब 'व्यवस्थित' करता है। अब इसमें आप कैसे कंट्रोल लाओगे?

प्रश्नकर्ता : जो दोष दिखते हैं वे चले तो जाएँगे न?

दादाश्री : जो दिखने लगे, वे तो चले ही गए समझो न! जगत् को अपने दोष दिखते ही नहीं, दूसरों के दोष दिखते हैं। आपको अपने दोष दिखाई दिए न?

प्रश्नकर्ता : अपने दोष दिखते हैं, किन्तु उन्हें टाल नहीं सकते।

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ भी मत करना। 'हमें' ऐसा नहीं करना है। यह विज्ञान है। 'चंदूभाई' क्या करते हैं, वह आपको देखते रहना है। बस, आपको इतना ही करना है और कोई काम ही नहीं। चंदूभाई के ऊपरी आप। चंदूभाई तो 'व्यवस्थित' के ताबे में है। 'व्यवस्थित' प्रेरणा देता है और चंदूभाई लट्टू की तरह घूमता रहता है! और जब चंदूभाई की कोई बहुत बड़ी भूल हो तब आपको कहना है कि, 'चंदूभाई! ऐसा करने से नहीं पुसाएगा।' इतना हमें कहना है!

नहीं है प्रकृति हमारी सत्ता में

प्रश्नकर्ता : किन्तु स्वभाव में जो जड़ता है, उम्र होने के कारण वो दृढ़ हो गई है। कोई क्रोधी है, कोई लोभी है। इसलिए जब तक हर एक व्यक्ति अपना स्वभाव सुधारने का प्रयत्न नहीं करता, तब तक उससे कभी सत्संग होनेवाला नहीं है।

दादाश्री : ऐसा है न, प्रकृति स्वभाव, छोटी

दादावाणी

उम्र में आपका जो स्वभाव था उसमें अभी कितना बदलाव आया है?

प्रश्नकर्ता : अच्छा खासा बदलाव आया है।

दादाश्री : यानी अपने डेवलपमेन्ट (विकास) के आधार पर बदलाव आ जाएगा। हम करने जाएँगे तो नहीं होगा। जैसे-जैसे संयोग बदलते रहेंगे वैसे-वैसे प्रकृति स्वभाव बदलता जाएगा। बाकी, प्रकृति छोड़ती नहीं है। प्रकृति का स्वभाव हम नहीं बदल सकते। संयोग बदलते रहते हैं। वैसे संयोग मिलने चाहिए। अहंकारी प्रकृति हो, तो आप जब भी देखो तब वह अहंकार में ही होता है और लोभी प्रकृति हो, तो जन्म हुआ तब से अंतिम स्टेशन (मृत्यु) को जाए तो भी उसमें लोभ होता है। अंतिम स्टेशन तक जाने के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी कर रखी हों न, तो वह कहेगा कि, 'इन लकड़ियों में से इतनी ही लकड़ियाँ मुझे जलाने के लिए उपयोग में लेना, दूसरी घर के काम के लिए हैं।' ऐसे साफ कहकर मरता है, क्योंकि उसमें लोभ है न! यानी वह उसका प्रकृति स्वभाव है।

प्रश्नकर्ता : प्रकृति कम होती है?

दादाश्री : कम हो उसे भी करनेवाले आप नहीं हो। आपके पुरुषार्थ से कम नहीं होती, वो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स के आधार पर कम होती है या फिर बढ़ भी जाती है। उन एविडन्स के आधार पर बढ़ भी जाती है या कम भी हो जाती है। प्रकृति हमारी सत्ता में नहीं है। इसलिए आपको तो ये देखना है कि, ओहोहो! इतनी लोभी प्रकृति है तो सारी जिन्दगी ये प्रकृति छोड़नेवाली नहीं है। इसलिए हमें भावना ऐसी करनी है कि, 'मेरी जो भी मिलिक्यत है वो जगत् कल्याण के लिए खर्च हो।' ऐसी भावना करें तो इस भावना का फल फिर अगली प्रकृति, यानी अगले जन्म में आपका मन बड़ा होगा। इस जन्म की तो बिगड़ गई, ये जन्म तो

गया, किन्तु नया जन्म तो सुधारो। यानी इस प्रकृति को देखकर आपको नई सुधारनी है, ये आपको सावधान करती है कि नया सुधारो। यदि पसन्द नहीं हो तो ऐसी भावना करो और पसन्द हो तो फिर रहने दो। यानी सिर्फ भावना ही करनी है, और कुछ भी नहीं करना है।

प्रकृति के साथ बातचीत का व्यवहार

प्रश्नकर्ता : अब और कुछ भी नहीं करना है। आपने ये जो आज्ञा दी कि अब आपको कुछ भी नहीं करना है, तो अब किसी व्यक्ति को पढ़ने का मन होता हो, किसी व्यक्ति को कोई क्रिया करने का मन होता हो, फिर भी उस समय ये उपयोग रहता है कि ये मुझे नहीं करना है ये तो मेरा उदयकर्म है और डिस्चार्ज है, ऐसा सोचकर मुझे इसे पूरा करना है।

दादाश्री : ये 'मैं' नहीं कर रहा, ये 'चंदूभाई' करते हैं, इस तरह चंदूभाई के नाम पर ही हमें व्यवहार रखना है। उदयकर्म है, ऐसा बोलना ही नहीं पड़े। 'चंदूभाई, कैसे हो? आपकी तबियत अच्छी है या नहीं?' सुबह उठकर इस प्रकार सबकुछ पूछें-करें। क्योंकि वो हमारे पड़ोसी हैं न! उसमें हर्ज क्या है? इस तरह आप काम तो लेना! देखना, कितना सुंदर करते हैं! प्रकृति के साथ....

प्रश्नकर्ता : डाँटने की ज़रूरत नहीं है।

दादाश्री : नहीं। प्रकृति के साथ एडजस्ट होना आना चाहिए। प्रकृति तो सुंदर स्वभाव की है।

प्रकृति बहुत सुंदर होती है किन्तु हम उसे उलझाते हैं। इसलिए हम ऐसा भी कह सकते हैं कि, 'अब तो आप इन पुत्रों के फादर (पिता) हो, बेटियों के फादर हो, आपकी तो बात ही अलग है न! आप बड़े वकील हो।' ऐसी बातचीत करने में हर्ज नहीं है (फाइल नं-१ के साथ) कमरा बंद

दादावाणी

करके बातचीत करनी है। हमारे कान सुनें उतनी ही ज़ोर से बोलना है। दूसरा कोई नहीं सुनें और हमारे कान सुनें, किन्तु इस तरह बोलते ही नहीं हैं न! और 'हम' अलग हो गए हैं इसलिए अलगपन प्रत्यक्ष अनुभव में आता है। कई लोग इस तरह बोलते हैं और भीतर प्रत्यक्ष अलगपन अनुभव करते हैं। और आपको, 'कैसे हो', ऐसा पूछने में हर्ज क्या है, पड़ोसी होकर हर्ज क्या है? और फिर भी चाय तो पीने ही वाले हैं, और वो हमारी चाय कहाँ है? वो तो उनकी ही चाय है, हमारी तो है ही नहीं न! 'ज़रा डेढ़ कप चाय पी लो', कहना। सामनेवाले से कहना, 'दो, चंदूभाई को चाय दो'। हँसते-खेलते मोक्ष में जा सकें, ऐसा मार्ग है।

प्रकृति के साथ समझाकर काम लेना है

ये ज्ञान मिला है, इसलिए अब एक क्षण के लिए भी प्रमाद का सेवन करने जैसा नहीं है। (फाइल नं-१ की) प्रकृति को डाँटना नहीं है, उलाहना नहीं देना है। उससे कहना है कि तुम्हें जो खाना होगा, वो सारी चीज़ें तुम्हें सप्लाई (प्रदान) करेंगे, किन्तु हमारी इतनी बात तुम मानो। देह से कहना है कि इतना हमारा मानो। इगोइज़म (अहंकार) बहुत उछल-कूद करता हो तो उससे कहना है कि इतना हमारा मानो।

प्रश्नकर्ता : यदि उसका विरोध करें, तब दादाजी? उसके विरोध में बैठें तो क्या होगा?

दादाश्री : नहीं, प्रकृति के विरोध में बैठें तो वो भी विरोध में बैठेगी। उसे तो यही चाहिए। उसे तो यही चाहिए कि विरोध करें तो क्रब्जे में लूँ। हमें विरोध में नहीं बैठना चाहिए। उसके साथ तो समझा-बुझाकर काम लेना है। ये प्रकृति चाहे कितनी भी बड़ी हो किन्तु है तो उसकी बालक जैसी अवस्था। कब उल्टा कर दे, छोटे बच्चे जैसा कर दे, कह नहीं सकते! इसलिए उसे समझा-बुझाकर, गोलियाँ

(चोकलेट) खिलाकर, लालच देकर, पकोड़े खिलाकर भी हल लाना है।

प्रश्नकर्ता : मतलब उसे सहलाकर हल लाना है?

दादाश्री : नहीं, सहलाकर नहीं, समझाकर। सहलाकर मतलब वो तो गलत कहलाएगा। उसे समझाना है। वो खुद यस (हाँ) करे, एक्सेप्ट (स्वीकार) करे तब तक समझाना है। समझाए बिना काम नहीं होगा, विरोध नहीं करना है। विरोध करने से हमारी बैलगाड़ी को वो पलटा देगी। बैल को यदि ज्यादा मारें तो वह गाड़ी को पलटा देता है। जब मारते हैं तब वह दौड़ता तो है, इसलिए हमें ऐसा लगता है कि मारने से ही दौड़ता है, चल रहा है, ऐसी श्रद्धा बैठती है, किन्तु वह कब गाड़ी को पलटा दे ये कह नहीं सकते। प्रकृति कितनी भी बड़ी हो जाए, चाहे जितने वर्ष हो जाएँ, फिर भी स्वभाव से वो बालक है। सारी ज़िन्दगी वृद्ध का काम करता हो, किन्तु कब बाल्यावस्था आ जाए ये कह नहीं सकते। रो पड़ता है, दीन हो जाता है, गिड़गिड़ाता है, सबकुछ करता है, करता है या नहीं करता?

प्रश्नकर्ता : करता है।

दादाश्री : प्रकृति, बालक अवस्था कहलाती है, तो फिर ऐसे बालक को समझाना वो आसान वस्तु है। आसान नहीं है?

प्रकृति के पास समझा-बुझाकर काम लेने जैसा है। समझाना तो अवश्य चाहिए। जब तक वो 'यस' नहीं कहे तब तक सब व्यर्थ है। और वो 'यस' कहे ऐसी है।

छह महीनों से मना करती हो, किन्तु समझाएँ तो पंद्रह मिनट में 'यस' कहे ऐसी है! बालक जैसी है और हठ पर अड़े तो लाख (बहुत) वर्षों तक ठिकाने पर नहीं आता। हठ पर अड़ना और समझाना,

दादावाणी

इन दोनों में बहुत फ़र्क है। समझाने का तरीका आना चाहिए। चाहे कितनी ही ज़िद पर अड़ा हुआ बच्चा हो, लेकिन यदि उसे समझाना आ गया तो समझ जाता है। वर्ना वह शोर मचा देता है, ऊधम मचा देता है। उसे समझाना आना चाहिए। हमारे अंदर आत्मा है और आत्मा प्राप्त होने के बाद सबकुछ आता है। सारे तरीके आते हैं, यदि ढूँढ़ें तो! खुद छानबीन करे और थोड़ा सबर करे तो भीतर से दर्शन में आ जाता है। किन्तु खुद छानबीन करे तो ही। छानबीन नहीं करते, समझते भी नहीं, मारकर काम लेते हैं।

प्रकृति वह मिश्रचेतन

प्रश्नकर्ता : प्रकृति वृद्ध जैसी है, ऐसा कहा है, तो वो किस दृष्टि से?

दादाश्री : वृद्ध जैसी है उसका कारण ये है कि, कितने भी बड़े लश्कर आएँ तब वो छोड़ नहीं देती, पकड़कर रखती है। और अगर छोड़ देती है तो यों ही तुरन्त छोड़ देती है। ऐसा 'हमने' देखा है। प्रकृति यदि जड़ होती तो वो छोड़ती ही नहीं, वीतरागी कहलाती। किन्तु प्रकृति ने चेतनभाव को प्राप्त किया है, मिश्रचेतन है।

'मिश्रचेतन' अर्थात् कि इस प्रकृति के जो सारे परमाणु हैं, उन्हें 'मिश्रसा' कहते हैं। 'मिश्रसा' जब रस (फल) देकर चले जाते हैं, तब उन्हें 'विश्रसा' कहते हैं। चोखे परमाणुओं को 'विश्रसा' कहा जाता है। और जब उनमें भाव किया उस समय 'प्रयोगसा' हो गए। प्रकृति के परमाणुओं के गुण ने चेतनभाव को प्राप्त किया है। इसलिए उससे कह सकते हैं, समझा सकते हैं। इस 'टेपरिकार्ड' (मशीन) से कहें, शोर मचाएँ, समझाएँ, तो क्या समझा सकते हैं?

जो लोग आत्मा जानते ही नहीं हैं, उनको

उसके बिना चलता ही है न? क्योंकि प्रकृति मिश्रचेतन है। हमारे बच्चे उम्र में बड़े हों, सभी के लिए जोरदार हों और किसी के झांसे में नहीं आनेवालों में से हों फिर भी कभी धोखा खा जाते हैं या नहीं? उसका क्या कारण है? वो प्रकृति है, उसे समझाने वाले होने चाहिए।

उलाहना देने के बजाय समझाना ज़्यादा हितकारी

प्रश्नकर्ता : कई बार समझाने से भी काम नहीं बनता।

दादाश्री : उसका अर्थ ये है कि समझाना नहीं आता।

प्रश्नकर्ता : कई बार प्रकृति को समझाने से काम नहीं बनता, तब उसे उलाहना देना ही पड़ता है। उदाहरण के तौर पर, डॉक्टर ने दो पूरियाँ ही खाने को कहा हो किन्तु आमरस हो तब तो प्रकृति कहेगी कि तीन खा लें। तब उसे समझाएँ तो वो नहीं मानती, उस समय उसे उलाहना देना ही पड़ता है। उस वक्त सहलाने से नहीं चलता।

दादाश्री : ऐसा है, यदि समझाना आ गया तब तो बहुत ही अच्छा है, नहीं आए तो फिर उलाहना देना है। किन्तु वो सेकन्डरी स्टेज कहलाता है। मगर ऐसा देह की बाबत में चलता है, मन की बाबत में उलाहना देना अच्छा नहीं है। देह तो थोड़ा जड़ है न, इसलिए उलाहना दो तो हर्ज नहीं है। मूल जड़ स्वभाव का है और मन को तो समझाना पड़ता है। देह को भी यदि समझाना आता हो तो समझाना ही अच्छा है। हमारा (दादाजी का) कहा तो देह भी सुनता है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, प्रकृति जितनी सहज हो गई है उतनी वो आसानी से मानती है, ये बात सही है?

दादावाणी

दादाश्री : हाँ, ये बात सही है। ये सारे परमाणु क्या कहते हैं? इन्होंने चेतनभाव को प्राप्त किया है इसलिए वे कहते हैं कि 'हम आपका उलाहना सुनने नहीं आएँ हैं।' उलाहना देने का फल आपको तुरन्त ही मिलेगा। ये सारा साइन्स (विज्ञान) है।

प्रश्नकर्ता : हम उसे बहुत कहें, चंदूभाई को हम बहुत उलाहना दें फिर भी वह टेढ़े चलें तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : तो फिर, टेढ़े हुए उन्हें 'देखते' रहना है। करना कुछ भी नहीं है। आत्मा में करने की शक्ति ही नहीं है। आत्मा अक्रिय स्वभाव का है और ज्ञाता-दृष्टा-परमानंदी है। करने का जो कुछ भी है वो सब पुद्गल का है। जो जड़ वस्तु है, उसकी ही सारी क्रिया है न!

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई टेढ़े चलें और दूसरे को ठोकर लग जाए तो फिर क्या करना चाहिए?

दादाश्री : माफ़ी माँगवानी है। 'टेढ़े चले उसकी माफ़ी माँगो', कहना है। ये अक्रम विज्ञान कितना सुंदर है कि आपको कुछ भी करना नहीं है बल्कि चंदूभाई से कहना है, उलाहना देना है, 'आप इसके साथ क्यों चिढ़ गए? ऐसा क्यों करते हो?' ऐसा कहना है। चंदूभाई से कहना है कि, 'तुम्हारा कहा सबकुछ मैं करूँगा किन्तु एक घंटे के लिए हमारे कहे अनुसार रहना।' एक घंटा दादा की आज्ञा में रहना है फिर चंदूभाई के कहे अनुसार करना है। उसे भी फिर देखना है, ध्येय से विरुद्ध करवाते हों तो नहीं मानना है।

रिश्वत लेता हो वहाँ बात नहीं मानते

मोक्षमार्ग में बाधक आया तो छोड़ देना है और पीछे हट जाना है। इसे, ध्येय पर रहे ऐसा कहा जाता है न! खुद का ध्येय चूके नहीं, कितनी ही

कठिन परिस्थिति में भी खुद का ध्येय नहीं चूके ऐसा होना चाहिए।

आपका कभी ध्येय के अनुसार चलता है? कुछ उल्टा नहीं चलता? ऐसा तो सहज ही हो गया है, है न?

प्रश्नकर्ता : भीतर 'हेन्डल' मारना चालू रखना पड़ता है।

दादाश्री : चालू रखना पड़ता है? किन्तु क्या भीतरवाले मानते हैं? तुरन्त ही?

प्रश्नकर्ता : तुरन्त ही मानते हैं।

दादाश्री : तुरन्त ही? देर ही नहीं लगती? ये तो अच्छा है। जितना माने वह अलग होने की निशानी है। हम उनसे उतने अलग ही हैं, ये निशानी। खुद को कोई रिश्वत की इच्छा नहीं है। रिश्वत की इच्छा हो तब वो (भीतरवाले) बात नहीं मानते। उनके पास 'खुद' रिश्वत लेता हो तो फिर वो हमारी बात नहीं मानते। 'खुद' स्वाद ले लेता है, फिर 'वो' नहीं मानते।

क्रोध वह डिस्चार्ज परिणाम

प्रश्नकर्ता : यह ज्ञान लेने के बाद भी क्रोध आए तो उसे भी डिस्चार्ज कहते हैं?

दादाश्री : क्रोध किसे आता है, ये 'देख' लेना है।

प्रश्नकर्ता : बार-बार क्रोध आता ही रहे तो भी डिस्चार्ज कहलाता है?

दादाश्री : सौ बार आए या पाँच सौ बार आए, वो सारा डिस्चार्ज ही कहलाता है न! हमें ऐसा कहना चाहिए कि 'चंदूभाई, बहुत अकुला रहे हो, इसलिए सभी की माफ़ी माँगो।' आप ऐसा नहीं कहते? भूल तो एक्झेक्ट हो गई है।

प्रकृति करे टेढ़ा, हमें करना है सीधा

प्रकृति टेढ़ा करे, किन्तु तू अंदर सीधा करना। प्रकृति क्रोध करने लगे तब 'हमें' 'चंदूभाई' से क्या कहना चाहिए? 'चंदूभाई, ये गलत हो रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए।' इसलिए 'आपका' काम पूरा हो गया! प्रकृति तो कभी उल्टी भी निकले या सीधी भी निकले। उससे हमारा लेनादेना नहीं है। भगवान क्या कहते हैं कि, 'तू तेरा मत बिगाड़ना।'

मनुष्य का स्वभाव ऐसा होता है कि जैसी प्रकृति वैसा खुद हो जाता है। जब प्रकृति सुधरती नहीं तब कहेगा, 'छोड़ो न'। अरे! नहीं सुधरती तो कोई हर्ज नहीं है, तू अपना अंदर का सुधार न! फिर हमारी 'रिस्पॉन्सिबिलिटी' (जिम्मेदारी) नहीं है! ऐसा ये 'साइन्स' है। बाहर चाहे जो कुछ भी हो, उसकी 'रिस्पॉन्सिबिलिटी' ही नहीं है। इतना समझे तो हल आ जाए। आपकी समझ में आया, मैं जो कहना चाहता हूँ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आया।

दादाश्री : क्या समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : सिर्फ देखना है, उसके साथ तादात्म्य नहीं हो जाना है।

दादाश्री : ऐसे नहीं। तादात्म्य हो जाए तो भी हमें तुरन्त कहना है, 'ऐसा नहीं होना चाहिए। ये सब तो गलत है।' प्रकृति तो सबकुछ करेगी, क्योंकि वो गैरजिम्मेदार है। किन्तु आप इतना बोले, कि जिम्मेदारी में से छूट गए। अब इसमें कोई आपत्ति आए ऐसा है?

प्रश्नकर्ता : आपत्ति तो नहीं है, किन्तु जब क्रोध आता है उस समय भान नहीं आता।

दादाश्री : अपना ज्ञान ऐसा है कि भान में रखता है। प्रतिक्रमण करते हैं, सबकुछ करते हैं। आपको भान रहता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : रहता है, दादाजी।

दादाश्री : हर एक बार रहता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हर एक बार रहता है।

दादाश्री : अपना ज्ञान ही ऐसा है कि निरंतर जागृति में और सिर्फ जागृति में ही रखता है। और जागृति, वही आत्मा है।

प्रकृति तो अभिप्राय भी रखती है और सबकुछ रखती है, किन्तु हमें अभिप्राय रहित होना है। हम अलग, प्रकृति अलग, ऐसा 'दादा' ने अलग कर दिया है। फिर हमें 'अपना' भाग अलग अदा करना है। इस 'पराई पीड़ा' में उतरना नहीं है।

**खुद उसमें मिले नहीं तो प्रकृति हो जाए
बिल्कुल ढीली**

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, इस ज्ञान से प्रकृति नरम (ढीली) तो पड़ती है न?

दादाश्री : बिल्कुल ढीली हो जाती है, क्योंकि फिर उसके अपने ज्ञान का लाइट (प्रकाश) भीतर नहीं जाता न! आत्मा की हाजिरी से ये सबकुछ चलता है। अब (आत्मज्ञान के बाद) आत्मा है, हाजिरी है, किन्तु उसका खुद का लाइट भीतर नहीं जाता न!

प्रश्नकर्ता : नहीं जाता मतलब प्रकृति....

दादाश्री : ढीली हो जाती है। प्रकृति आत्मा की हाजिरी से चलती तो है, किन्तु उसका लाइट भीतर नहीं जाता।

प्रश्नकर्ता : लाइट भीतर नहीं जाता यानी क्या?

दादाश्री : सारा पावर उड़ गया। प्रकृति का पावर (जोर) पूरा ठंडा पड़ गया। ढीला पड़ गया।

दादावाणी

गुस्सा किया, वो सिर्फ प्रकृति ने किया। हम भीतर मना कर रहे हों और प्रकृति गुस्सा करती हो, उसे हम गुस्सा कहते हैं। और प्रकृति और अहंकार दोनों इकट्ठे मिलकर करें तो उसे क्रोध कहते हैं। यानी अहंकार चला नहीं जाता, वो उसका पावर है। गुस्से में भी अहंकार चला नहीं गया है न! लेकिन वहाँ उसका पावर नहीं है। बिना पावर का क्रोध, जला नहीं डालता, जलन पैदा नहीं करता।

रही सिर्फ इफेक्ट कॉज़ेज़ बंद होने पर

ये तो 'इफेक्टिव' मोह को 'कॉज़ेज़' मोह माना जाता है। आप सिर्फ ऐसा मानते ही हो कि 'मैं क्रोध करता हूँ'। किन्तु जब तक आपको भ्रांति है, तब तक ही क्रोध है। बाकी, वह क्रोध है ही नहीं, वो तो 'इफेक्ट' है। और 'कॉज़ेज़' बंद हो जाएँ तो फिर सिर्फ 'इफेक्ट' ही रहती है। 'कॉज़ेज़' बंद किए तो 'ही इज़ नोट रिस्पॉन्सिबल फोर इफेक्ट' (परिणाम के लिए, वह जवाबदार नहीं है), और इफेक्ट अपने भाव बताए बिना रहेगी ही नहीं।

चंदूभाई चाहे जितना क्रोध करते हों, किन्तु यदि आपको 'मुझे होता है' ऐसा भान उत्पन्न नहीं होता, तो आप जोखिमदार ही नहीं हो। ऐसा ये विज्ञान है। बहुत चौकस रहना चाहिए। और उस समय उससे किसीको दुःख हो जाए, हमारे भावों से सामनेवाले व्यक्ति को कुछ दुःख हो जाए तो हमें कहना है, 'चंदूभाई, प्रतिक्रमण कर लो, अतिक्रमण क्यों किया?' 'हम' अलग और 'चंदूभाई' अलग! एक गुस्सा करता है और दूसरा मना करता है। जो मना करता है वह आत्म विभाग और करता है वह पुद्गल विभाग।

किसीको दुःख नहीं हो, इतना देखना है।

भीतर भाव, पुद्गल भाव उत्पन्न होते हैं, उन्हें संसार भाव कहा जाता है। भीतर तरह-तरह के भाव

उत्पन्न होते हैं वे सारे भी पुद्गल भाव हैं। जो भाव आए और फिर विनाश हो जाए वे सारे पुद्गल भाव हैं। लेकिन हम वहाँ चिपक जाएँ कि 'मुझे ऐसा उत्पन्न हुआ', तो मार खाना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जो पुद्गल भाव आएँ, उन्हें हमने जाना तो वे चार्ज के तौर पर हैं या डिस्चार्ज के तौर पर हैं?

दादाश्री : डिस्चार्ज के तौर पर हैं।

प्रश्नकर्ता : चाहे जैसे भी आएँ, अच्छे या बुरे, किसी भी प्रकार के?

दादाश्री : अच्छे-बुरे तो समाज ने बनाए हैं, भगवान के यहाँ ऐसा नहीं है। अच्छा-बुरा तो अपने-अपने समाज के अनुसार है। किसी बकरे को काटना इसे हम पाप मानते हैं और कई लोग इसे पाप नहीं मानते। मतलब, अच्छा-बुरा ये समाज की व्यवस्था है। भगवान के घर सबकुछ एक समान है। और मोक्ष में जाना हो तो विचार अच्छे हैं या बुरे ये देखने की ज़रूरत नहीं है। हाँ, हमारे विचार से किसीको दुःख लगता हो तो हमें फाइल नं-१ से कहना पड़ेगा न, 'अब क्षमा माँग लो, माफ़ी माँग लो।' किसीको दुःख नहीं हो, उतना ही देखना है। हमें किसीको धक्का देने की ज़रूरत नहीं है। ऐसा हमें शोभा नहीं देता। धक्का देकर हम मोक्ष में जाएँ ऐसा हो भी नहीं सकता। किसीको भी किंचित् मात्र दुःख नहीं देना है।

उद्वेग होता है चंदूभाई को, आपको नहीं

प्रश्नकर्ता : किन्तु हम में अभी भी उद्वेगभाव फिर प्रकट होता रहता है न?

दादाश्री : उद्वेग भी होता है और वेग भी होता है, दोनों होते हैं। किन्तु 'चंदूभाई' को होते हैं। 'आपको' नहीं होते। 'आपको' पता चलता है कि 'चंदूभाई' को उद्वेग हुआ। यदि 'चंदूभाई' ने उद्वेग

दादावाणी

का व्यापार किया हो तो उद्वेग होगा, वर्ना आवेग आता है या तो वेग आता है। उन सबका पता चलता है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु उद्वेग में ही फँसे हुए रहते हैं न!

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। आप अपनेआप को फँसा हुआ मानते हो या 'चंदूभाई' फँसे हुए लगते हैं?

प्रश्नकर्ता : किन्तु 'चंदूभाई' फँसे हुए रहते हैं न?

दादाश्री : वो तो फँसे हुए रहेंगे। उसमें हमें क्या? जितना डिस्चार्ज है वो तो हुए (निकले) बिना चारा ही नहीं है। उसमें अपना कुछ चलता ही नहीं न! खुद पर नहीं आना चाहिए कि 'मैं फँस गया'। क्योंकि शुद्धात्मा तो शुद्धात्मा ही है। उसे कुछ भी नहीं छूता, वह है शुद्धात्मा।

ये 'मेरा नहीं है' कहने से रह सकें प्रकृति से भिन्न

ये कषाय, सिर्फ व्यवहार कषाय हैं। वास्तव में ये निश्चय कषाय नहीं हैं। किन्तु वे हल्के (कम) होते जाते हैं। अंत में तो व्यवहार कषाय भी नहीं होने चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : ये जो व्यवहार कषाय हैं, वे ही बहुत परेशान करते हैं न!

दादाश्री : नहीं, अपने ज्ञान के बाद क्या कषाय परेशान करते होंगे?

प्रश्नकर्ता : वे कषाय इस फाइल नं-१ को होते हैं, लेकिन वे बहुत परेशान करते हैं। इसलिए अकुलाहट होती है, फिर क्लेश होते रहते हैं।

दादाश्री : लेकिन ऐसा आपको तो नहीं होता न?

प्रश्नकर्ता : मान्यता में तो ऐसा ही है कि मुझे नहीं होता। किन्तु फिर भी जो अनुभव होता है न, वो अनुभव अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : तब आप इतना ही कहो कि, 'ये मेरा नहीं है', तो फिर आपको छूएगा ही नहीं। जो मान्यता में है, वही आप बोलो, कि 'ये मेरा नहीं है', तो छूता नहीं। आप, 'मेरा नहीं है', ऐसा नहीं बोलोगे तो भीतर घुस जाएगा।

प्रश्नकर्ता : किन्तु ऐसा बार-बार बोलना पड़ता है?

दादाश्री : हाँ, उस समय तो ऐसा बोलना ही पड़ेगा न। कषाय भीतर घुसने की तैयारी करें तो हमें पता नहीं चलता कि, 'अरे, मेरा नहीं है। पराये घर के हो, यहाँ क्यों घुसने आए हो?' इस तरह बोलना पड़ता है। व्यवहार उसे कहा जाता है कि एक-एक शब्द बोलना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : घंटेभर बाद ख्याल आता है कि ये 'मेरा नहीं है'।

दादाश्री : पर इस तरह बोलें तो वापस आएँगे ही नहीं न! 'चला जाता हूँ' ही कहेंगे। फिर हमें नहीं छूते।

अच्छी आदतें-बुरी आदतें वह प्रकृति गुण

लोग तो प्रकृति के गुणों को छुड़वाते हैं। अरे, इस तरह कब अंत आएगा? हम तो कहते हैं कि, अच्छी आदतों और बुरी आदतों से शुद्धचेतन सर्वथा मुक्त ही है। हम इस दुकान में से निकल गए और कहा कि, 'ये दुकान मेरी नहीं है!' दुकान में से एक-एक चीज़ बाहर निकालें तो कब अंत आएगा? इसके बजाय, 'दुकान मेरी नहीं है' कहकर निकल गए यानी हो गया!

दादावाणी

प्रकृति को डाँटने से क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : यानी हमें इस तरह झटकार देना है कि हमें इसमें कोई लेना-देना नहीं है।

दादाश्री : लेना-देना नहीं है और हमें उसके ज्ञाता-दृष्टा रहना है। कभी किसीको परेशान करे और किसीको दुःख हो जाए तो हमें कहना है, 'आप बिना मतलब के क्यों ऐसा करते हो? और अब कितने समय यहाँ बंधे रहना है?' ऐसा सब कहना। लेकिन उस पर चिढ़ना नहीं है। उसे डाँटने से क्या फ़ायदा? प्रकृति अर्थात् जैसे पम्प मार-मारकर चेतन भरा है। उसमें अब क्या (बदलाव) ढूँढना? और अगर उससे कुछ हो जाए तो भी डाँटने से क्या फ़ायदा?

भीतर के भाव वही वास्तविक व्यवहार

प्रश्नकर्ता : आपने सुंदर दृष्टांत दिया था कि तानसा नदी का जो पानी है, वहाँ से उसका काँक (वाल्व) बंद कर दिया तो पाइप में जितना पानी भरा हुआ है उतना ही निकलता है।

दादाश्री : इन लोगों का (महात्माओं का), भीतर जानेवाला जो पानी था वो वाल्व तो बंद हो गया, किन्तु बाहर निकलने का तो बाकी रहा न! अब पानी निकल रहा है, उसमें यदि पहले डामर (तारकोल) गिरा हो तो डामरवाला पानी बाहर निकलेगा। तो क्या उस समय उसे डाँटना चाहिए? पहले जो भरा था वो अब निकला है, उसमें तुम क्यों डाँटते हो? खाली तो करना पड़ेगा न?

मतलब इन सभी का उचित व्यवहार है। क्योंकि, गुस्सा होते ही अंदर आपको क्या होता है? 'ऐसा नहीं होना चाहिए', ऐसा होता है न? एक तरफ़ वह गुस्सा करता है और दूसरी तरफ़ 'ऐसा नहीं होना चाहिए', ऐसा भीतर पछतावा हुआ करता है। उस अभिप्राय में बदलाव आ गया, वह आपका व्यवहार।

'ऐसा नहीं होना चाहिए', उसे उचित व्यवहार कहते हैं।

व्यवहार डिस्चार्ज, वहाँ झंझट कैसी?

प्रश्नकर्ता : दादाजी का ज्ञान लेने के बाद व्यवहार के कई डिस्चार्ज जो होते हैं वे पसन्द नहीं आते, तो उसे किस तरह मनाना है?

दादाश्री : पसन्द हो वे अपने हैं और नहीं पसन्द हो वे पराये हैं? नापसन्द और पसन्द दोनों का समभाव से *निकाल* (निपटारा) करना है, और नापसन्द हो उनके लिए तो ऊपर छत पर जाकर चिल्लाना है कि 'सब एक साथ मिलकर आ जाओ'। बाकी, चार्ज की तो चिंता ही नहीं करनी है।

प्रश्नकर्ता : आपने तो कहा था न कि डिस्चार्ज की चिंता नहीं करनी चाहिए।

दादाश्री : डिस्चार्ज को लोग क्या कहते हैं? 'मुझे क्यों ऐसा होता है, अभी भी क्रोध हो जाता है, ऐसा होता है...।' अरे! ये तो डिस्चार्ज हुआ, वो तो अच्छा हो रहा है। यदि ये डिस्चार्ज नहीं हुआ, तो उसकी झंझट है। हम ऐसा कहते हैं कि डिस्चार्ज हो रहा है, लेकिन आप ऊब जाते हो। हकीकत में तो, हमारा डिस्चार्ज जल्द से जल्द खत्म हो जाए ऐसा रखना चाहिए, हम ऐसा कहना चाहते हैं। मतलब, डिस्चार्ज हो रहा है तो हमें इस बात की खुशी होनी चाहिए कि ओहोहो! बहुत अच्छा हुआ, जल्दी निकल गया। डिस्चार्ज नहीं हो रहा हो तो झंझट करनी चाहिए कि डिस्चार्ज नहीं हुआ, तो अब कुछ करना पड़ेगा। इसलिए मैं कह रहा था कि छत पर जाकर बुलाओ, 'आओ पधारो' कहना।

जाननेवाले को नहीं है नुकसान

प्रश्नकर्ता : यहाँ सत्संग में बैठे हों फिर भी अपना चित्त बाहर जाकर आए तो ये अजागृति है या प्रकृति की खामी है?

दादावाणी

दादाश्री : ये प्रकृति का काम है, ये अजागृति नहीं है। जाकर लौट आता है उसे भी आप जान जाते हो न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो आप जाननेवाले हो। वो तो बाहर जाकर लौट आता है। कोई बकरी बाहर निकल जाए, फिर बाहर जाकर लौट आए, उसमें जाननेवाले को क्या नुकसान हुआ? मान लो कि चरवैये की बकरी बाहर निकल गई, और लौटकर नहीं आई तो उस चरवैये को तो ऐसा लगेगा कि 'अब क्या होगा?' लेकिन यहाँ तो सभी लौटकर आएँगे ही। जितने यहाँ से निकलकर बाहर गएँ न, उनको भूख लगेगी कि अपनेआप लौटकर आएँगे। कहाँ जाएँगे? इसलिए हमें देखते रहना है। 'ओहोहो! आप बाहर घूम रहे हो?' कहना। 'कहाँ, भूलेश्वर में घूम रहे हो? किसलिए? क्यों, कुछ चाहिए?' ऐसा हमें कहना है। कोई भूलेश्वर में घूमता है, तो कोई ज़वेरी बाज़ार में भी घूमता है। ये चित्त कहाँ जाता है?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी चला जाता है।

दादाश्री : वो जाए तो उसमें क्या हर्ज है? वो दोष प्रकृति का है। जागृति तो है, इसलिए तो आपको पता चलता है। ये कोई नुकसानदायक नहीं है। वो जाए तब उसके साथ हम भी जाएँ तब मुसीबत होती है।

स्वपद में रहने पर नहीं लगता कोई दाग़

अगर आप आत्मा होकर रहते हो तो सभी कर्मों की निर्जरा है और आत्मा होकर नहीं रहते तो ज़रा-सी दखल हुई कि उस कर्म का थोड़ा-सा दाग़ लग जाएगा। क्योंकि, ये जो हुआ वो आपकी मान्यता नहीं है। वहाँ पर भूल हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : स्वपद में से परपद पर में खिसक जाता है?

दादाश्री : नहीं, खिसक नहीं जाता। परपद पर चला नहीं जाता। किन्तु उसके मन में ऐसा होता है कि, 'ये कौन है? 'ये तो मेरी ही भूल है न?' किन्तु वो 'मेरी भूल' तो कब थी? जब तक 'हम' 'चंदूभाई' थे, तब तक भूल थी। अब तो 'हम' 'शुद्धात्मा' हो गए। 'शुद्धात्मा' तो ऐसी भूलवाला है ही नहीं। इसलिए अगर उलझन हो तो हमें कहना है कि, 'चंदूभाई, ओहोहो! बहुत-सी भूलें की हैं।' इससे क्या होगा, कि ऐसा हम बोलते हैं न, वही अलगपन दर्शाता है और 'आपकी' ज़िम्मेदारी का वहाँ पर एन्ड (अंत) आता है।

ज़रूरत है जागृति बढ़ाने की

अपना ज्ञान तो ऐसा है कि कोई कहे कि, 'आपने हमारी घड़ी चुरा ली', तब हम कहें कि 'आपको जो लगे वो सही'। हमें आत्मस्वरूप होकर जवाब देने हैं। फिर उस समय आप चंदूभाई हो जाओ, तो दिया हुआ आत्मा चला जाता है। (खुद तन्मयाकार हो जाता है)

प्रश्नकर्ता : ऐसा होने के बावजूद भी जागृति बढ़ती जाती है। जागृति बढ़ाने के लिए ये मार्ग है।

दादाश्री : हाँ। जागृति एकदम बढ़ जाती है। जागृति तो बहुत ऊँची हो जाती है, बहुत बढ़ती है। किन्तु वस्तुस्थिति में, अब ज़रा-सी भी दखल रहती हो तो तुरन्त स्वीकार लेता है। कहेगा, 'मैंने कहाँ चोरी की है'। अरे, रक्षण क्यों करते हो? जो तुम्हारा नहीं है उसका रक्षण तुम क्यों करते हो? जो बात तुम्हारी है ही नहीं उसका रक्षण करने की तुम्हें ज़रूरत नहीं है। स्वीकार कर लें फिर तो हमारी ही भूल कहलाएगी न? बाद में उसे पता चल जाता है कि अपनी भूल हो गई। चाहे बाद में पता चले, लेकिन उतनी जागृति तो है।

दादावाणी

ये ज्ञान ही मोक्ष में ले जाए ऐसा है। किन्तु फिर आपकी जागृति से उसे बहुत हेल्प (मदद) करनी चाहिए, पुरुषार्थ करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : पुरुष और प्रकृति दोनों अलग हो गए, फिर तो पुरुषार्थ की ज़रूरत ही नहीं है न!

दादाश्री : नहीं, वास्तविक पुरुषार्थ वहीं से शुरू होता है।

प्रश्नकर्ता : इसके बाद पुरुषार्थ किसलिए करना है?

दादाश्री : प्रकृति से हमेशा के लिए छूटने के लिए। क्योंकि प्रकृति ऐसा कहती है कि 'आप तो पुरुष हो गए, किन्तु अब हमारा क्या? आपने हमें बिगाड़ा था। हमें हमारे मूल स्थान पर पहुँचा दो तो आप छूट जाओगे। वर्ना छूट नहीं पाओगे।' इसलिए तब पुरुषार्थ करना है।

पुरुष होने के बाद ही सच्चा पुरुषार्थ

पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ होता है। प्रकृति और पुरुष दोनों अलग हो गए। जब तक आप 'चंदूभाई' थे, तब तक प्रकृति थी और प्रकृति जैसे नचाए वैसे आप नाचते थे। आप पुरुष हो गए और प्रकृति अलग हो गई। पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ उत्पन्न होता है। पुरुषार्थ में जागृति तो है ही। पुरुषार्थ में और क्या है? हमें तय करना चाहिए। स्थिरतापूर्वक सारी बातचीत करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ ये हुआ कि 'ये गलत है या सही है' इसका आग्रह नहीं रखना है।

दादाश्री : सही-गलत तो है ही नहीं। इसका आग्रह तो रखना ही नहीं है। किन्तु आपने कभी अनुभव नहीं किया हो, ऐसा कभी सुना नहीं हो, और आपसे कहें कि 'आपने चोरी की', एकदम से कभी

ऐसा आपके सुनने में आए तब क्या होगा? तब इमोशनल हो जाता है। इसलिए हमें चंदूभाई से कहना है कि, 'भाई, चोर ही हो। कोई चोर कहे तो घबराना मत'। ऐसा पहले से ही हमें चंदूभाई से कहकर रखना पड़ता है। हाँ, 'कोई कहे तो घबराना मत। कोई धौल मारे तो भी मत घबराना' ऐसा हमें कहकर रखना चाहिए। वर्ना फिर, कोई धौल नहीं मारे और यों ही चपत लगाए, तो भी असर हो जाता है। इसलिए ऐसी प्रैक्टिस करके रखनी चाहिए। ऐसा रिहर्सल (पूर्वाभ्यास) करवाकर रखना चाहिए। नहीं करवाना चाहिए? करवाकर रखना अच्छा है। कभी मुश्किल आए उस घड़ी, किया हुआ रिहर्सल फल देता है। वर्ना, ये ज्ञान तो कितने ही लोगों को निरंतर समाधि देता है!

उपराणु वह बड़ी कमजोरी

प्रश्नकर्ता : आपने हमें जो दृष्टि दी है, वह धोने की (प्रतिक्रमण करने की) दृष्टि दी है, फिर भी प्रकृति का उपराणु (तरफ़दारी) क्यों ले लिया जाता है?

दादाश्री : अभी भी आप प्रकृति पक्ष के हो, इसलिए। हम तो प्रकृति का उपराणु नहीं लेते। जब से प्रकृति का दोष दिखा, कि तुरन्त कब माफ़ हो जाए उस ओर की तैयारी होती है। अभी भी उपराणु लिया जाए न, वो तो भयंकर गुनाह है। उस दोष को छिपाए तो भी उपराणु, वो भी गुनाह है। आप कहो कि 'दादाजी, ये गलत है।' तब मुझे कह देना चाहिए कि 'हाँ भाई, गलत है।' मैं अपना बचाव करने के लिए दूसरे शब्दों का इस्तेमाल करूँ, वकालत करूँ, वो गुनाह है।

प्रश्नकर्ता : दोष को छिपाना वह कमजोरी है।

दादाश्री : वो गुनाह ही कहलाता है।

वीतराग होने पर प्रकृति से पार

प्रश्नकर्ता : प्रकृति को किस तरह माफ़ कर सकते हैं?

दादाश्री : उस पर चीढ़ नहीं और कुछ भी नहीं। खुद की प्रकृति पर चीढ़ना नहीं है, *उपराणु* नहीं लेना है। और माफ़ कर देना मतलब उसकी ओर राग नहीं, द्वेष नहीं, वीतरागता। खराब तो निकलेगा ही। ज्ञानी को भी कभी खराब (माल) निकलता है, किन्तु हम (दादाश्री) उसकी ओर तुरन्त वीतराग हो जाते हैं!

प्रकृति से जो-जो होता है, वो क्या है? उदय में आया है। प्रकृति को जो भुगतने का आया, उसे भुगतते हो। मैं कुछ बोलूँ और फिर मन में ऐसा हो कि मैं ऐसा क्यों बोला! किन्तु उसमें हमारा कुछ भी नहीं चलता, क्योंकि प्रकृति में जो बुन गया है उसे 'वो' बोलेगा ही, उसे 'हमें' देखते ही रहना है। मैं जो कहना चाहता हूँ, वो समझ में आया या नहीं? कम्प्लीट (पूरा) समझ में आ जाए तो काम हो जाए न!

ज्ञाता-दृष्टा रहे तो ही व्यवस्थित

शुद्धात्मा के अलावा और कौन-सा भाग रहा (बचा)? प्रकृति रही (बची)। वो गुनहगारी है। प्रकृति कुछ करती हो उस समय हम कहें कि 'तू जोर से कर', ऐसा भी नहीं कहना है और 'मत करना' वैसा भी नहीं कहना है। हमें तो ज्ञाता-दृष्टा रहना है, तो 'व्यवस्थित'।

और कभी-कभी, प्रकृति को ठंडक (शांति) रहे इसलिए कहना पड़ता है कि व्यवस्थित है। क्योंकि भीतर तरह-तरह की उलझनें पैदा होती हैं, लौकिक ज्ञान हाज़िर हो जाता है, इसलिए हमें ये ज्ञान पहले से ही कहना पड़ता है कि व्यवस्थित है। बाकी, व्यवस्थित का अर्थ तो यह है कि प्रकृति के कार्य में दखल नहीं करनी है।

आज्ञा वही पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : जो प्रकृति लेकर आएँ हैं वो तो दुःखदायी ही है। अब वीतराग के पास से ये ज्ञान मिला। अब प्रकृति, प्रकृति का भाग अदा करती है और उसे जो सुख-दुःख होता है वो कभी कम हो जाता है?

दादाश्री : वो सबकुछ कम तो नहीं, लेकिन फिर छूएगा ही नहीं। जब पता चलेगा कि ये पराया है, तब पूरा ही अनुभव होगा। अभी तो, पराया है ऐसा अनुभव नहीं होता न!

आत्मा अलग होने के बाद पुरुषार्थ रहा। जब तक देहाध्यास था, तब तक पुरुषार्थ खुला नहीं हुआ था। पुरुषार्थ तो, पुरुष और प्रकृति दोनों अलग हुए, उसके बाद शुरू होता है। फिर पुरुषार्थ होते-होते पुरुषोत्तम होता है! पुरुष में से पुरुषोत्तम होता है। पुरुषोत्तम योग उत्पन्न होता है। पुरुषार्थ कौन-सा करना है? 'मेरा नहीं', 'मुझे कुछ नहीं छूता', 'ये हमारा नहीं', ऐसा कहते ही कुछ चिपकता नहीं है। क्योंकि ऐसा ये नियम है। हमारा है या पराया इसमें अगर उलझन होती हो तो 'मेरा नहीं है' ऐसा कह देना। तो अपनेआप भाग जाता है, खड़ा ही नहीं रहता। ये कहने के लिए भी नहीं रुकता कि 'मैं आपका था'। 'ये मेरा नहीं है', कहा कि चलने लगता है।

इस पुरुषार्थ का परिणाम क्या?

भेदविज्ञान से पुरुष और प्रकृति दोनों अलग हो जाते हैं। फिर पुरुष होने के बाद इस आज्ञा का पालन करे तो पुरुषोत्तम होता है। वह अंतिम दशा पुरुषोत्तम, पुराण पुरुष पुरुषोत्तम भगवान कहते हैं, जिन्हें *पोतापणुं* (मैं हूँ और मेरा है, ऐसा आरोपण) भी नहीं होता। इस देह में *पोतापणुं* नहीं होता कि 'मैं कहता हूँ और मेरी क्यों सुनते नहीं हो!'

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : खुद एक सेकन्ड के लिए भी पुरुष हो जाए तो बहुत हो गया।

दादाश्री : एक सेकन्ड के लिए भी कोई पुरुष हुआ नहीं है। आनंदघनजी महाराज ने क्या कहा? 'हे अजीतनाथ भगवान! आपने तो क्रोध-मान-माया-लोभ, राग-द्वेष को जीत लिया इसलिए आप पुरुष कहलाए, किन्तु उन सब ने मुझे जीत लिया, तो मैं पुरुष कैसे कहलाऊँ?' अर्थात्, पुरुष होना ये कोई आसान बात नहीं है! एक सेकन्ड के लिए भी पुरुष हो जाए न, तो परमात्मा हो गया।

तुम अपने स्वभाव में, वहीं परमात्मा पद

प्रश्नकर्ता : अब 'तुम अपने स्वभाव में आ जाओ', ऐसा जब कहते हैं, तब (ऐसा) किसे कहते हैं?

दादाश्री : परमात्म स्वभाव में आ जाओ, ऐसा कहते हैं। ये तो तुम दूसरी दशा में हो, उल्टी दशा में हो। संसारी दशा में हो, प्राकृत दशा में हो। तुम अपने स्वभाव में आ जाओ। खुद की परमात्मा दशा में आ जाओ। 'तुम परमात्मा हो' उस दशा में आ जाओ। भगवान के पास या किसीके भी पास ऐसी सत्ता नहीं है कि इन सभी की सत्ता अपने हाथ में ले, लाइसेन्स लें। जो खुद के स्वभाव में आया वो परमात्मा होता है।

ज्ञानी का पुरुषार्थ कैसा?

हम रास्ते पर से आ रहे थे तब एक बस जल रही थी, मैंने उसे देखा। मैंने कहा, 'बस जल रही है'। बहुत ज़ोरो से होली की तरह सुलग रही थी। तब मैंने जाना कि, 'बस जल रही है'। फिर मैं भी उसी दृष्टि से देखूँ इसलिए ये प्रकृति तो यहाँ तक कहने लगी कि, 'अरेरे! इन लड़कों ने क्या किया? ये अनामत विरोधी! इन लोगों को खुद को पता नहीं है कि वो क्या कर

रहे हैं'। इस प्रकार मेरी प्रकृति ने अंदर जो शुरू किया, उसे मैं देख रहा था कि (भीतर) प्रकृति में क्या चल रहा है!

प्रकृति तो बोले बिना रहती नहीं न! 'ये बस जल रही है और ऐसा हो रहा है', तो हमारा उसमें क्या चला गया? प्रकृति को ऐसा लगता है कि सबकुछ अपना ही है, इसलिए वो होशियारी दिखाए बिना नहीं रहती। प्रकृति होशियारी ही दिखाती रहती है। उसे हम देखते रहते हैं, बस। और क्या? हम समझ गए कि 'ओहोहो! प्रकृति क्या कर रही है!' 'इन लड़कों को ऐसा नहीं करना चाहिए। लड़कों को समझ नहीं है, इसलिए ऐसा कर रहे हैं। लड़कों को पता नहीं है कि वो क्या कर रहे हैं।' किन्तु इन सभी को 'हम' जानते हैं। मैं जानता रहता हूँ और एक तरफ़ प्रकृति तो अपनी बातें करती रहती है।

इस प्रकृति के भीतर कोई पगला हो तो वो पूछता है कि 'आप कौन हो?' तब फिर हम कहते हैं कि, 'हम केवलज्ञान स्वरूप हैं। तुम्हें जो करना है वो करना, उन पर जितने दावे करने हों वो करना!'

प्रकृति को देखना, वही ज्ञाता-दृष्टापन

खुद की प्रकृति को देखना, वही ज्ञाता-दृष्टापन है। आप ज्ञाता-दृष्टा हो गए हो। फिर प्रकृति के साथ बातचीत करनी है, चंदूभाई के नाम से ही हमें व्यवहार रखना है। यानी फिर उदयकर्म है ऐसा बोलना ही नहीं पड़े। 'चंदूभाई, कैसे हो। आपकी तबियत अच्छी है या नहीं?' सुबह उठकर यों सब पूछें-करें। क्योंकि, हमारे पड़ोसी हैं न! इसमें हर्ज क्या है? और फिर जैन के पड़ोसी जैन हैं और ब्राह्मण के पड़ोसी ब्राह्मण हैं, फिर क्या हर्ज है? इसलिए उन्हें, 'कैसे हाल-चाल हैं, आज डेढ़ कप चाय पी लो' यों सब कहना है। इस तरह आप काम

दादावाणी

तो लेना। देखना, प्रकृति कितना सुंदर काम करती है। प्रकृति के साथ एडजस्ट होना आना चाहिए। प्रकृति तो सुंदर स्वभाव की है।

प्रश्नकर्ता : खुद की प्रकृति को कैसे पहचान सकते हैं?

दादाश्री : देखने से पहचान में आती है। निरीक्षण करने से पहचान में आती है।

प्रकृति को देखनेवाला व्यक्ति प्रकृति से एकदम अलग हो, तो ही देखता है। संसार व्यवहार में प्रकृति को देखनेवाले नहीं होते, प्रकृति को स्टडी (अध्ययन) करनेवाले होते हैं। ज्ञान के बाद 'खुद' प्रकृति को आत्मा होकर देखता है, कि इसकी कैसी-कैसी आदतें हैं! मन-वचन-काया की आदतें और उनके स्वभाव को देखता है।

लगाम छोड़ने का प्रयोग

प्रश्नकर्ता : प्रकृति का 'अनालिसिस' (पृथक्करण) किस तरह करना है, ये समझाइए।

दादाश्री : सुबह उठे तब से भीतर चाय के लिए शोर मचाती है या किस चीज़ के लिए शोर मचाती है, ऐसा पता नहीं चलता? वह प्रकृति है। और क्या माँगती है? तब कहे कि, 'थोड़ा-सा नाश्ता, चिवड़ा लाना'। ये भी पता चलता है न? इस प्रकार सारा दिन प्रकृति को देखे तो प्रकृति का 'अनालिसिस' हो जाता है। उससे दूर (अलग) रहकर सबकुछ देखना चाहिए! ये सब अपनी मरजी से कोई नहीं करता, प्रकृति करवाती है!

प्रश्नकर्ता : ये तो स्थूल हुआ। किन्तु अंदर जो चलता है उसे किस तरह देखना है?

दादाश्री : वो इच्छा किसे हुई, ये हमें देख लेना है। ये इच्छा मेरी है या प्रकृति की है, वो हमें देख लेना है। क्योंकि भीतर दो ही वस्तुएँ हैं।

प्रश्नकर्ता : अलग रहकर 'देखना', उस तरह की प्रैक्टिस करनी पड़ती है?

दादाश्री : एक ही दिन प्रैक्टिस करें तो फिर ये सबकुछ आ ही जाता है। ये सब एक ही दिन के लिए करने की ज़रूरत है। फिर बाकी सभी दिनों में वही का वही पुनरावर्तन है।

इसलिए हम एक रविवार के दिन लगाम छोड़ देने का प्रयोग करने के लिए कहते हैं। इससे, हमारे मन में ये जो होता है न कि 'हमने ये लगाम पकड़ी है तो ही ये सबकुछ चलता है', वो सब निकल जाता है।

प्रश्नकर्ता : लगाम पकड़ी है ऐसा कहा, मतलब वो तो अहंकार हुआ न?

दादाश्री : हाँ, किन्तु वो डिस्चार्ज अहंकार है। हमें अहंकार को जान लेना चाहिए और ये भी जान लेना चाहिए, कि ये (सबकुछ) किस आधार पर चलता है? फिर भी अभी उसका भाव तो उल्टा ही रहता है कि, 'मेरी वजह से चलता है।' इसलिए, ऐसा प्रयोग करें न, तो वो सबकुछ बाहर निकल जाता है।

'चंदूभाई क्या-क्या करते हैं', उसे देखते रहना वह आपका पुरुषार्थ। 'चंदूभाई क्या करते हैं', चंदूभाई का मन क्या करता है, बुद्धि क्या करती है, चित्त क्या करता है, अहंकार क्या करता है', इन सभी को देखते रहो, भीतर दखल नहीं करो, वह पुरुषार्थ। ऐसा करने से, इन सभी को आपने स्वच्छता से देखा इसलिए स्वच्छ होकर चला जाता है।

प्रश्नकर्ता : फिर ये पुद्गल स्वच्छ हो जाता है न!

दादाश्री : हाँ, जो पुद्गल बिगड़ा हुआ है, विकारी हो गया है, वो निर्विकार होकर स्वच्छ होकर चला जाता है। मतलब, हमारी गुणहगारी

दादावाणी

मानी जाती है कि हमने खड़ा किया था तभी वो ऐसा हुआ न, इसलिए फिर वो दावा करता है। इसलिए वास्तविक पुरुषार्थ इसके बाद शुरू होता है।

छूटी हुई लगाम देखो तो सही

प्रश्नकर्ता : जो पुरुषार्थ भाग है, उसमें सूक्ष्म समझ का भाग वही पुरुषार्थ कहलाता है? इन्द्रियों की लगाम छोड़ देना वो भी इसमें आ जाता है?

दादाश्री : आप सुबह उठकर बोलो कि आज इन्द्रियों के घोड़े की लगाम छोड़ देते हैं। ऐसा पाँच बार शुद्धभाव से बोलो। फिर अपनेआप लगाम छूटी हुई देखो तो सही। एक रविवार का दिन बीतने तो दो! ये तो, 'क्या हो जाएगा, क्या हो जाएगा!' अरे, कुछ भी नहीं होनेवाला है! तुम तो भगवान हो। भगवान को क्या होनेवाला है! खुद को इतनी हिम्मत नहीं आनी चाहिए कि 'मैं भगवान हूँ!' 'दादा' ने मुझे भगवान पद दिया है! ऐसा ज्ञान मिला है! यानी भगवान हो गए हो, किन्तु अभी भी उसका पूरा लाभ मिलता नहीं है। इसका कारण क्या है? कि हम उसे आजमाइश (प्रयोग) के तौर पर लेते ही नहीं हैं न! उस पद का इस्तेमाल ही नहीं करते न! थोड़ा-बहुत उस पद में रहा करो तो!

ये मन, वाणी और वर्तन जो 'डिस्चार्ज' होते रहते हैं, उन्हें अब सिर्फ देखते ही रहना है। 'डिस्चार्ज' हमारी सत्ता में नहीं है। उसमें हम दखल करने जाएँ तो कोई फ़ायदा नहीं होगा। 'हमें' तो 'चंदूभाई' क्या कर रहे हैं, उसे ही देखते रहना है। भगवान महावीर सिर्फ यही करते थे। खुद का जो पुद्गल था, उसमें क्या चल रहा है वही देखते थे। एक पुद्गल को ही देखते रहते थे, और कुछ भी नहीं देखते थे। वे कितने सयाने थे! जिनकी बात करते ही आनंद होता है!

प्रश्नकर्ता : किन्तु संसार में ड्रामेटिक में भी खुद को करना तो पड़ता है न?

दादाश्री : 'ड्रामेटिक' में, करना नहीं पड़ता, सबकुछ होता ही रहता है। और कुछ करने जैसा है भी नहीं, अपनेआप ही होता रहता है। सोने के समय नींद आ जाती है, उठने के समय जाग जाता है। सबकुछ होता ही रहता है। इसमें, 'करना पड़ता है या करने जैसा है' ऐसा नहीं बोलना है और 'नहीं करना या करने जैसा नहीं है' ऐसा भी नहीं बोलना है, क्योंकि खुद में कर्त्तापन है ही नहीं। आत्मा अकर्त्ता है।

प्रकृति स्वभाव को जाने, वह ज्ञायकता

प्रकृति स्वभाव को निहारे, उसे ज्ञायकता कहते हैं। वो भी दूसरों की नहीं, खुद की ही। प्रकृति स्वभाव का वेदन करे उसे वेदकता कहते हैं और प्रकृति स्वभाव को जाने उसे ज्ञायकता कहते हैं।

अनादि से परिचय है न! सिर में दर्द हुआ तो वास्तव में तो खुद जानता ही है, और कुछ भी नहीं करता। और आपको ज्ञायकता दी हुई है कि प्रकृति को देखो। इसलिए प्रकृति के सिर में दर्द हुआ उसे देखना है। इसके बजाय, मुझे दर्द हो रहा है ऐसा करने से वहाँ अजागृति आ जाती है। इसलिए दर्द शुरू हो जाता है। और यदि जाने, तो किसे दर्द हो रहा है उसे जानता है। सामनेवाले के दुःख को भी जानता है।

अपना विज्ञान बहुत अलग तरह का है। कई बार हम (दादाश्री) भी अमुक बाबत में दुःख से अलग नहीं रह सकते। अमुक बाबत में अलग ही होते हैं किन्तु अमुक दुःख की बाबत में, भीतर किसी जगह, चिपका रहता है (तन्मयाकार हुआ रहता है)। जो चिपका है, उसे हम उखाड़ते रहते हैं।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर ज़्यादा उपयोग रखते हैं?

दादाश्री : ज़्यादा उपयोग रखते हैं। मतलब उपयोग रखना पड़ता है। और जानने में सहज उपयोग होता है।

दांत में दर्द हो तब खुद जानता ही है। जाननेवाला तो सिर्फ जानता ही रहता है, उसे भीतर दर्द नहीं होता। दर्द प्रकृति को होता है, चंदूभाई को दर्द हो और खुद कहे कि 'मुझे दर्द हुआ', तो चिपका। जैसा चिंतन करे वैसा तुरन्त हो जाता है। किन्तु अब उसमें ज़्यादा गहरा उतरने के लिए मना करता हूँ। उसके लिए तो अगला एक जन्म बाकी ही है न। तब सबकुछ निकल जाएगा।

खाली हो रहा चारित्रमोह

चंदूभाई का चारित्रमोह निकलेगा। इस स्थिति में भी उनका चारित्रमोह तो निकलने ही वाला है। सारा चारित्रमोह जो भरा हुआ है, उसे देखते रहना है। वो चारित्रमोह निकलता है। मतलब, वो किसीके साथ गुस्सा हुए हों, उस समय भीतर तो वो इससे एकदम अलग ही होते हैं, कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए।' बाहर गुस्सा होता है किन्तु भीतर का ज़ोर उससे ज़्यादा होता है। यानी वो अलग रहते हैं। मतलब ये चारित्रमोह शुद्ध हुआ कहलाता है, और (उसे) देखकर जाने दिया कहलाता है। उसे अलग देखकर फिर जाने दिया, तब शुद्ध हो जाता है। अलग नहीं देखा और यों ही गया तो शुद्ध नहीं कहलाता।

चारित्रमोह को देखते रहना, ऐसा कब हो पाता है? जगत् विस्मृत हो, तब। जगत् विस्मृत कब हो पाता है? तो ज्ञानी पुरुष के टच (संपर्क) में ही रहे, तब। फिर सारे हिसाब मिट जाते हैं। टच यानी हमेशा के लिए, सारी ज़िन्दगी के लिए नहीं, किन्तु अमुक समय तक टच में रहें तो

सबकुछ मिट जाता है। मिट जाने के बाद फिर से उत्पन्न नहीं होता।

आज्ञा पालन से चारित्रमोह की निर्जरा

प्रश्नकर्ता : मतलब अलग देखने से चारित्रमोह उड़ जाता है। और पाँच आज्ञा में रहने से भी उड़ जाता है न?

दादाश्री : देखना, वही पाँच आज्ञा है न! रिलेटिव और रियल देखना, वो आज्ञा में आता है। मतलब चारित्रमोह निकालने के लिए ऐसा अलग से कहा है। आँखों पर पट्टी बाँधकर चारित्रमोह खड़ा (उत्पन्न) किया और खुली आँखों से देखकर चारित्रमोह को निकाल दिया।

प्रश्नकर्ता : अपने महात्माओं का दर्शनमोह निकाल दिया और अब चारित्रमोह बाकी रहा। पूरे दिन में जो कुछ भी होता है, वो सबकुछ चारित्रमोह ही माना जाता है। उठा वो भी चारित्रमोह, चाय पी वो भी चारित्रमोह, वो सब चारित्रमोह में ही जाता है। मतलब निरंतर चारित्रमोह को चारित्रमोह के तौर पर ही देखे, ऐसी एक्ज़ेक्ट (यथार्थ) जागृति कौन-सी है?

दादाश्री : हमने कहा है न कि व्यवस्थित है, देखते रहना। उस आज्ञा से मोक्ष है। देखते रहना है। चाहे कोई भी कार्य करता हो फिर भी उसे (व्यवस्थित) देखते रहना है।

सुलझ रहा है वहाँ राग-द्वेष मत करना

तुम किताब में लिख रहे हो वो भी चारित्रमोह है। क्योंकि, अगर कोई उसे ले लें तो मोह उत्पन्न होता है, तुम्हें पसन्द नहीं आता, वह मोह। ये लोग सत्संग सुन रहे हैं वो भी चारित्रमोह। इसमें किसी प्रकार का मोह है न, यहाँ आते हैं वो भी चारित्रमोह है। क्रिया का हर्ज नहीं है, क्रिया में मोह है, उसका हर्ज है। क्रिया में हर्ज नहीं होता। आप चबा-चबाकर

दादावाणी

खाओ उसमें भी हर्ज नहीं है और बिना चबाए खाओ उसमें भी हर्ज नहीं है। कड़वी दवाई झट से गले के नीचे उतार दो उसमें हर्ज नहीं है और धीरे-धीरे पीओ तो भी हर्ज नहीं है। किन्तु उसमें मोह है। कोई कहेगा, 'चाहे कितनी ही कड़वी हो तो भी मैं तो धीरे-धीरे पीता हूँ', तो उसे भी चारित्रमोह कहते हैं और कोई कहे, 'मुझ से ये कड़वा नहीं पीया जाएगा', वो भी चारित्रमोह। चारित्रमोह, एक प्रकार का मोह है।

प्रश्नकर्ता : मतलब जो लपेटकर लाएँ हैं वो सुलझ (खुल) रहा है, उसे चारित्रमोह कहना है?

दादाश्री : हाँ, जो माल लपेटकर लाए हो न, वो फिर सुलझता (खुलता) है, उसे चारित्रमोह कहते हैं। और भगवान कहते हैं, 'सुलझ रहा है उसमें फिर राग-द्वेष मत करना और ज्ञाता-दृष्टा रहना'।

चिढ़वाला चारित्रमोह भी निकल जानेवाला है और रागवाला भी निकल जानेवाला है। उसे 'देखना' है कि चारित्रमोह में क्या-क्या निकलता है? राग-द्वेष के परिणामवाला माल निकले, उसे हमें देखते रहना है। चंदूभाई ने किसीको झिड़काया, उस पर आपको द्वेष नहीं हो। 'ऐसा नहीं करना चाहिए' ऐसा शायद कह दो, किन्तु द्वेष नहीं हो। द्वेषवाला माल निकले तब 'हम' हिल जाएँ तो नहीं चलेगा।

वहाँ छूटना है प्रतिक्रमण करके

प्रश्नकर्ता : 'चंदूभाई' क्या कर रहे हैं, उस चारित्रमोह को देखते रहें, उस समय कोई खराब विचार आए तो?

दादाश्री : खराब विचार आए वो भी चारित्रमोह।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसा खराब भाव उत्पन्न हो, उसे भी सिर्फ देखते ही रहना है?

दादाश्री : खराब कहते हो, वही जोखिम है। खराब कुछ भी होता ही नहीं है। सामनेवाले को दुःख हो जाए तो कहना है कि, 'चंदूभाई, आपने क्यों दुःख दिया? इसलिए प्रतिक्रमण करो।' भगवान के यहाँ अच्छा-बुरा नहीं है। ये सब समाज को है।

चारित्रमोह को जानना, वह उपयोग

प्रश्नकर्ता : आपका एक वाक्य है, ज्ञानी पुरुष के ज्ञान से दर्शनमोह जाता है और आज्ञा पालने से चारित्रमोह जाता है।

दादाश्री : सही है, ये दोनों रहें तो काम का। आप अगर चारित्रमोह को पकड़ो तो आपका, और नहीं पकड़ो तो आपका नहीं। आप ज्ञाता-दृष्टा रहो तो आपका नहीं और कहो कि 'मुझे ऐसा क्यों होता है' तो आपका। जैसे रास आए वैसे करना।

प्रश्नकर्ता : उस चारित्र मोहनीय को जो जानता है वही उपयोग है न?

दादाश्री : चारित्रमोह को जानना, वही उपयोग। जो जानता है उसे छूता नहीं।

शुद्ध उपयोग, वही पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : मतलब जितनी देर के लिए ज्ञाता-दृष्टा रहें, वो पुरुषार्थ!

दादाश्री : या तो दूसरों में शुद्धात्मा देखो या आज्ञा का पालन करो तो पुरुषार्थ। मेरी जो पाँच आज्ञा हैं न, उनका पालन करो तो उस समय पुरुषार्थ होता ही है। अर्थात् पाँच आज्ञा में रहें न, वह शुद्ध उपयोग ही है। वर्ना प्रकृति को निहारना है। अभी यदि चंदूभाई किसी चीज़ के लिए किच-किच करते हों, उस समय वो 'खुद' चंदूभाई को (अलग) देखे कि 'अरे, क्या कहने! अभी भी आप वैसे के वैसे ही हो, बदलाव आया ही नहीं है।' ऐसा देखे तो इसे शुद्ध उपयोग कहते हैं। शुद्ध उपयोग वही अपना पुरुषार्थ।

प्रकृति को निहारे वह पुरुष

‘प्रकृति’ पराधीन है, आत्माधीन नहीं है। ‘प्रकृति’ को पहचानने वो परमात्मा होता है। ‘पुरुष’ को पहचानने तो ‘प्रकृति’ पहचान में आती है। ज्ञानी होने के बाद (आत्मज्ञान होने के बाद) पुरुष होता है। पुरुष हुआ मतलब पुरुषार्थ शुरू हुआ, और पुरुष का पुरुषार्थ क्या होता है? तब कहे कि प्रकृति को निहारते ही रहता है।

प्रकृति को निहारे वह पुरुष। प्रकृति को निहार लिया वह परमात्मा। तो प्रकृति में क्या-क्या निहारना है? तब कहे, मन क्या विचार कर रहा है उसे निहारे, बुद्धि कौन-कौन से निर्णय लेती है उसे भी निहारे, अहंकार कहाँ-कहाँ पागलपन करता है उसे भी निहारे, कहाँ टकराता है उसे भी निहारे। क्योंकि अहंकार अंधा है, वो तो बुद्धि की आँखों द्वारा चलता है, उसे बुद्धि के अलावा और कोई नहीं रखेगा। बुद्धि है इसलिए उसका इतना रोफ़ है, प्रेसिडन्ट बनकर बैठे हैं, बुद्धि प्रधानमंत्री बनती है। अर्थात्, अहंकार को और इन सभी को निहारे, वह शुद्धात्मा है। उसे सिर्फ़ निहारना है।

प्रकृति को निहारना वह स्वरमणता। प्रकृति के भीतर क्या-क्या आता है? तब कहे, मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार, इन्द्रियाँ ये सबकुछ प्रकृति में आ गया। और चंदूभाई से कोई कहे, ‘चंदूभाई, आपमें अक्ल नहीं है, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय ठीक से नहीं करते’ और इस पर चंदूभाई का चेहरा उतर गया और ‘खुद’ उसे निहारे तो बस, हो गया। आपको खुद को पता चलता है कि चेहरा उतर गया उसमें हर्ज नहीं है। चेहरा उतर गया तो लोगों को हर्ज है। आपको हर्ज नहीं है, किन्तु उसे निहारना है।

प्रश्नकर्ता : एकबार आपने एक वाक्य कहा था कि ‘तू विकल्प मत करना, किन्तु यदि विकल्प हो जाए तो विकल्प और विकल्पी दोनों को देखना, तो अलग हो जाओगे।’

दादाश्री : देखना, सही कहा है। वही स्वरमणता!

परमात्मा प्रकृति को निहारे

प्रश्नकर्ता : ‘प्रकृति को निहारे वह पुरुष और प्रकृति को निहार लिया वह परमात्मा।’ इसे विशेषता से समझाइए।

दादाश्री : मतलब चंदूभाई की प्रकृति, चंदूभाई क्या कर रहे हैं, ऐसा सबकुछ निहारे वह पुरुष कहलाता है और निहार लिया यानी परमात्मा।

प्रश्नकर्ता : पुरुष और परमात्मा में क्या फ़र्क है?

दादाश्री : पुरुष जो है वो अभी परमात्मा हो रहा है। और परमात्मा को कोई क्रिया करने की नहीं रही, खुद ज्ञाता-दृष्टा, परमानंदी। और आपको फाइलों का निकाल करने का रहा, बस।

यानी पुरुष अभी देखने का अभ्यास करता है कि ये प्रकृति करती है, इसे वो खुद नहीं करता, ये सबकुछ प्रकृति करती है, वह पुरुष कहलाता है। जैसे कि, सामनेवाला गालियाँ दे तब मन में ऐसा हो कि, ‘ओहोहो! वो कर्ता नहीं है, ये तो उसकी प्रकृति करती है।’ तब वह पुरुष हुआ कहलाता है। किन्तु अभी स्थिरता नहीं आई है इसलिए असर हो जाता है। बाकी, पुरुष ही है। और जिसे अब निहारने का काम नहीं रहा, गालियाँ सुनते ही तुरन्त प्रकृति अलग दिखती है, वह परमात्मा हो गया।

(सामनेवाले की) भूल दिखती है मतलब वह प्रकृति को निहारता नहीं है। बाद में उसे पता चलता है कि ये भूल हो गई। इस जगत् में किसीकी भी भूल नहीं है और जो भी भूल है वो प्रकृति की भूल है। अब भूल है प्रकृति की और हम ‘उसे’ (व्यक्ति को) भूलवाला कहते हैं, ये बहुत बड़ा गुनाह है।

दादावाणी

इसलिए मैंने क्या कहा? प्रकृति के साथ प्रकृति झगड़ा करती हो, उसे देखो!

प्रश्नकर्ता : उसे देखते रहना है।

दादाश्री : तो हर्ज नहीं है। किन्तु दूसरी प्रकृति (जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया हो) झगड़ा करती हो, उसे हमारे द्वारा दुःख होता हो तो वो हमारी भूल है। क्योंकि वह सामनेवाला प्रकृति को नहीं जानता, वह तो 'मैं ही हूँ' ऐसा ही जानता है। इसलिए उसे तो कुछ भी नहीं कह सकते। किसीको भी दुःख नहीं लगे ऐसा ही होना चाहिए। आप क्लेश करो या न करो, कोई फेर-बदलाव होनेवाला नहीं है। अनंत जन्मों से क्लेश ही करते आए हो, और कुछ भी नहीं किया है और खुद ऐसा मानते हैं कि क्लेश करने से कुछ तो बदलाव आ जाएगा। कोई फेर-बदलाव नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : किन्तु दादाजी, प्रकृति के लिए हम जो प्रतिक्रमण करें, तो उससे तो थोड़ा परिवर्तन हो सकता है न?

दादाश्री : उस बदलाव के लिए हमने उसे ज्ञान दिया है। उस ज्ञान का जब परिणाम आएगा तब फेर-बदलाव होगा।

ध्येय तो किनारे पहुँचने का ही

अब यदि हमें मोक्ष में जाना हो तो प्रज्ञा को सिन्सियर रहो। और संसार के मोह भोगने हों तो प्रकृतिवश हो जाओ। अभी कर्म के उदय उस ओर ले जाए वो बात अलग है। कर्म के उदय खींचकर उस ओर ले जाएँ फिर भी हमें तो इस ओर (मोक्ष की ओर) का ही रखना है। नदी हमें दूसरी ओर खींचे लेकिन हमें तो किनारे तक पहुँचने के लिए ही जोर लगाना है। जोर लगाना चाहिए या वो जिस ओर खींचकर ले जाए उस ओर खींचे चले जाना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : मतलब उसका निश्चय पक्का हो तो सिन्सियर रहेगा न?

दादाश्री : पक्का हो तो ही रह सकते हैं न! वर्ना तो जिसे निश्चय ही नहीं है, उसे फिर क्या? जिस ओर नदी का प्रवाह खींचकर ले जाए उस ओर चला जाता है, किनारा तो कहीं और रह गया। और हमें तो किनारे की ओर खींचना है। नदी उस ओर खींचे तो हमें इस ओर के लिए हाथ-पैर मारने चाहिए। थोड़ा-बहुत, जितना इस तरफ आया उतना सही, यों करते-करते तो ज़मीन पर आ जाता है!

समुद्र में हम उतरे हों और ज्यादा पानी हो तो जब तक पैर सतह को नहीं छूते, तब तक तो प्रयास करना पड़ेगा न! और वैसे तो सबकुछ हो ही रहा है, अभी इसके लिए कुछ करना नहीं है, सिर्फ बात को जानकर रखना है। जानकर रखो तो फिर अपनेआप फिट होती ही रहती है। जानकर समझ लेना है। हकीकत में तो ज्ञान अर्थात् क्या? कि जानना और समझना। भीतर अपनेआप ही सबकुछ होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : जानते हैं फिर भी मूर्च्छा की एक ज़बरदस्त लहर आए तो फिर से वैसे का वैसे ही हो जाता है। जानने के बावजूद भी ऐसा हो जाता है।

दादाश्री : ऐसा है न, हमारी तो पिछले कितने ही जन्मों से इस सबकी शुरुआत हो चुकी है, और आपकी कितने जन्मों की शुरुआत है? तब कहे, अभी थोड़े ही वर्षों की। थोड़े ही वर्षों की शुरुआत ने यदि इतना जोर लगाया है, तो फिर सारी मूर्च्छा ज़ल्दी चली जाएगी (पूरी प्रकृति ज़ल्दी खाली हो जाएगी), इस बात का तो यकीन हो गया न?

जय सच्चिदानंद

दादावाणी

पूज्य डॉ. नीरूमाँ के सत्संग की DVD

पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार / माता-पिता और बच्चों का व्यवहार			भाग-1
पोझिटिव दृष्टि / नहीं जगत में कोई दोषीत	भाग-1	क्रोध	भाग-1
कर्म का सिद्धांत	भाग-1	सास-बहु-पति	भाग-1
लोभ / पैसों का व्यवहार	भाग-1	मान	भाग-1

पूज्य डॉ. नीरूमाँ के सत्संग की DVD का पूरा सेट

कोलकता सत्संग 2006	भाग-1-3	बेंगलोर सत्संग 2005	भाग-1-3
बच्चों और युवाओं के लिए संस्कार सिंचन शिविर			भाग-1-2
सास-बहु-पति	भाग-1-6	माता-पिता और बच्चों का व्यवहार	भाग-1-6
पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार	भाग-1-10		
नई दृष्टि नई राह	भाग - 1-6, 7-12, 13-18, 19-24, 25-30, 31-36, 37-42, 43-48, 49-55		
कर्म का सिद्धांत	भाग-1-5	मृत्यु का रहस्य	भाग-1-10
गुरु-शिष्य	भाग-1-7	पैसों का व्यवहार (VCD)	भाग-1-40

पूज्य दीपकभाई के सत्संग की VCD

कोलकता - 2006	भाग-1-8	इन्दौर - 2007	भाग-1-6
बेंगलोर - 2006	भाग-1-7	बेंगलोर - 2007	भाग-1-8

पूज्य दीपकभाई के सत्संग की DVD

इन्दौर - 2008	भाग-1-5	दिल्ली सत्संग - 2007	भाग-1-3
हिन्दी शिविर 2009 अडालज	भाग-1-5	भोपाल शिविर - 2010	भाग-1-4
हिन्दी शिविर 2010 अडालज	भाग-1-5	पटना सत्संग - 2009	भाग-1-2
हिन्दी शिविर 2011 अडालज	भाग-1-4	आत्मज्ञान से केवलज्ञान की ओर (VCD)	
दिल्ली सत्संग 2010	भाग-1-2		

<i>English Satsang (Pujya Niruma)</i>	(DVD)		भाग-1-11
<i>English Satsang (Pujya Deepakbhai)</i>	(DVD)		भाग-1-15
ज्ञानभक्ति पद (MP3)	भाग-1	थीमपार्क	भाग-1

विज्ञान, शाश्वत सुख का व वात्सल्यमूर्ति नीरूमाँ (डाक्युमेन्टरी फिल्म)

परम पूज्य दादा भगवान की ज्ञानवाणी की सारी किताबें, पूज्य नीरू माँ तथा पूज्य दीपकभाई के सत्संग कार्यक्रमों की डीवीडी तथा भक्तिपद, आरती, प्रार्थनाओं, असीम जय जयकार की ओडियो तथा MP3 सीडी, दादावाणी मैगज़ीन प्राप्ति के लिए त्रिमंदिर अडालज के पते पर पत्र लिखें या नंबर 079-39830034, 9924343805 पर संपर्क करें।

एक वी.सी.डी. की किंमत: 20 रु. + पोस्टेज चार्ज

एक डी.वी.डी. की किंमत: 50 रु. + पोस्टेज चार्ज

दादावाणी



With Param Pujya Dada Bhagwan's infinite grace, Pujya Niruma's blessings and in the presence of Atma Gnani Pujya Deepakbhai Desai, We all mahatma pariwar of Dallas invite you and your family to attend and participate in the grand celebration of Param Pujya Dada Bhagwan's Gurupurnima.

With Param Pujya Dada Bhagwan in our hearts and his love for all in our eves we offer our greetings and namaskars to The Divine within you. On his behalf, with a deep sense of gratitude and humility, we accept the high privilege of hosting this celebration of The Self, The awakened Guru.

Jay Sachchidanand.

Date	Spiritual Discourses	Morning Session	Evening Session
Fri. June 29, 2012	GP Shibir	10:00 to 12.30 pm	4:00 to 6:30 pm
Sat. June 30, 2012	GP Shibir	10:00 to 12.30 pm	4:00 to 6:30 pm
	Aptaputra Satsang	-	4:00 to 6:30 pm
Sun. July 1, 2012	Satsang	10:00 to 12.30 pm	-
	GNANVIDHI	-	4:30 to 7:30 pm
Mon. July 2 2012	GP Shibir	9:30 to 12.00 pm	4:00 to 6:30 pm
Tue. July 3, 2012	GURUPURNIMA	8:00 to 12.00 pm	4:00 to 7.00 pm
Wed. July 4, 2012	GP Shibir	9:30 to 12.00 pm	4:00 to 6:30 pm

Satsang Venue

Hyatt Regency DFW, 2334 North International PKWY, DFW Airport, TX 75261.

Free Parking for attendees.

Co.: 1-877-505-DADA(3232) Ext 10, Email: gp@dadabhagwan.org, Visit: www.dadabhagwan.org

दादावाणी

Pujya Deepakbhai's USA-Canada Satsang Schedule 2012

Contact telephone no. for all centers in USA & Canada: 1-877-505-DADA (3232), email:usa@dadabagwan.org

Date	Day	Venue	Program	From	To	Venue	Email/Tel Extension
2-Jun	Sat	Philadelphia	Satsang	4.30 PM	7.00 PM	Radisson Hotel Philadelphia	eksoul@hotmail.com
3-Jun	Sun	Philadelphia	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM	Northeast 2400 Old Lincoln	Tel. Ext: 1002
3-Jun	Sun	Philadelphia	Gnanvidhi	5.00 PM	7.30 PM	Highway @ US Route 1,Trevese,PA,19053	
4-Jun	Mon	Philadelphia	Aptaputra Satsang	7.00 PM	9.30 PM		
6-Jun	Wed	Raleigh	Satsang	7.00 PM	9.30 PM		Tel. Ext: 1003
7-Jun	Thu	Raleigh	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM	Hindu Society of North Carolina	
7-Jun	Thu	Raleigh	Gnanvidhi	6.30 PM	9.00 PM	Temple Main Hall 309 Aviation Parkway,Morrisville,NC,27560	
8-Jun	Fri	Raleigh	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM		
12-Jun	Tue	Birmingham	Satsang	7.00 PM	9.30 PM	Hindu Temple and cultural Center	Tel. Ext: 1004
13-Jun	Wed	Birmingham	Gnanvidhi	6.30 PM	9.00 PM	of Birmingham 200 North Chandalar Drive,Pelham,AL,35124	
14-Jun	Thu	Birmingham	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM		
16-Jun	Sat	Chicago	Satsang	4.30 PM	7.00 PM	Jain Society of Metropolitan	Tel. Ext: 1005
17-Jun	Sun	Chicago	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM	Chicago (Jain Temple in Bartlett, IL)	atul.pandya7@gmail.com
17-Jun	Sun	Chicago	Gnanvidhi	5.00 PM	7.30 PM	435 N. Route 59, Bartlett, IL, 60103	
18-Jun	Mon	Chicago	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM		
20-Jun	Wed	Toronto	Satsang	7.00 PM	9.30 PM	Vedic Culture Centre 4345 14th	ivdeepak@gmail.com
21-Jun	Thu	Toronto	Gnanvidhi	6.30 PM	9.00 PM	Avenue,Markham, Ontario, L3R0J2	Tel Ext: 1006
22-Jun	Fri	Toronto	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM		canada@dadabagwan.org
23-Jun	Sat	Minneapolis	Satsang	4.30 PM	7.00 PM		sshah6@hotmail.com
24-Jun	Sun	Minneapolis	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM	S V Temple 7615 Metro Blvd.,Edina,MN,55439	Tel Ext: 1007
24-Jun	Sun	Minneapolis	Gnanvidhi	5.00 PM	7.30 PM		
25-Jun	Mon	Minneapolis	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM		
29-Jun	Fri	Dallas	GP Shibir	10.00 AM	6.30 PM		
30-Jun	Sat	Dallas	GP Shibir	10.00 AM	6.30 PM		
30-Jun	Sat	Dallas	Aptaputra Satsang	4.00 PM	6.30 PM		gp@dadabagwan.org
1-Jul	Sun	Dallas	GP Shibir	10.00 AM	1.00 PM	Hyatt Regency DFW 2334 N. International Parkway, Adjacent to Terminal C, Dallas-Fort Worth Airport, TX,75261	Tel. Ext. 10
1-Jul	Sun	Dallas	Gnanvidhi	5.00 PM	7.30 PM		
2-Jul	Mon	Dallas	GP Shibir	9.30 AM	6.30 PM		
3-Jul	Tue	Dallas	Gurupurnima	8.00 AM	12.00 PM		
3-Jul	Tue	Dallas	Gurupurnima	4.00 PM	7.00 PM		
4-Jul	Wed	Dallas	GP Shibir	9.30 AM	6.30 PM		
7-Jul	Sat	Phoenix	New Mhtm Satsang	4.30 PM	7.00 PM		mehta.vidhi@gmail.com
8-Jul	Sun	Phoenix	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM	Indo-American Community Center 2809 W. Maryland Avenue,Phoenix,AZ,85017	Tel. Ext: 1008
8-Jul	Sun	Phoenix	Gnanvidhi	5.00 PM	7.30 PM		
9-Jul	Mon	Phoenix	Aptaputra Satsang	7.00 PM	9.30 PM		
14-Jul	Sat	Los Angeles	Satsang	4.30 PM	7.00 PM		Tel. Ext: 1009
15-Jul	Sun	Los Angeles	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM	Jain Temple 8072 Commonwealth Ave,Buena Park,CA ,90621	boloram@sbcglobal.net
15-Jul	Sun	Los Angeles	Gnanvidhi	5.00 PM	7.30 PM		
Aptaputra's USA Satsang Program 2012							
29-May	Tue	Virginia	Aptaputra Satsang	7.30 PM	9.30 PM	Rajdhani Mandir, VA 20151	Tel Ext. 1012
6-Jun	Wed	Charlotte, NC	Aptaputra Satsang	7.00 PM	9.30 PM		Tel. Ext: 1003
14-Jul	Sat	Simi Valley	Aptaputra Satsang	4.30 PM	7.00 PM	Royal Delhi Palace CA 91303	Tel. Ext: 1009

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

भुज

दि. २५ अप्रैल (बुध), शाम ७-३० से १०-सत्संग तथा २६ अप्रैल (गुरु), शाम ६-३० से १० - ज्ञानविधि
स्थल : त्रिमंदिर, हिल गार्डन के पीछे, एयरपोर्ट रोड, भुज. संपर्क : 7567561556

मोरबी

दि. २७ अप्रैल (शुक्र), रात ८ से १०-३० - सत्संग तथा २८ अप्रैल (शनि), शाम ७ से १०-३० - ज्ञानविधि
स्थल : समय गेट के पास, विनायक होल के सामने, शनाला रोड, मोरबी. संपर्क : 9624124124

महेसाणा

दि. ७ मई (सोम), रात ८ से १०-३०-सत्संग तथा ८ मई (मंगल), शाम ७ से १०-३० - ज्ञानविधि
स्थल : विमल पार्टी प्लोट, मोढेरा चार रस्ता, हाई-वे रोड, महेसाणा. संपर्क : 9909973401

नडियाद

दि. १२ मई (शनि), रात ८ से १०-३०-सत्संग तथा १३ मई (रवि), शाम ७ से १०-३० - ज्ञानविधि
स्थल : बासुदीवाला स्कूल ग्राउन्ड, ईप्कोवाला होल ग्राउन्ड के पास, पारस सिनेमा के सामने. संपर्क : 9998981965

अडालज त्रिमंदिर

दि. २ अगस्त (गुरु), सुबह ९-३० से १२ - रक्षाबंधन के अवसर पर दर्शन-भक्ति
दि. १० अगस्त (शुक्र), रात १० से १२ - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति
दि. ११ अगस्त (शनि), शाम ४-३० से ७-सत्संग तथा १२ अगस्त (रवि), दोपहर ३-३० से ७-ज्ञानविधि
दि. १२ से १९ सितम्बर - पर्युषण पारायण सत्संग तथा २० सितम्बर - दर्शन

हैदराबाद : दि. १७-१८-१९ अगस्त - सत्संग तथा ज्ञानविधि
बंगलूर : दि. २१ -२२ अगस्त - सत्संग तथा ज्ञानविधि
औरंगाबाद : दि. ६-७ अक्टूबर - सत्संग तथा ज्ञानविधि
जयपुर : दि. ९-१० अक्टूबर - सत्संग तथा ज्ञानविधि
दिल्ली : दि. १२-१३-१४ अक्टूबर - सत्संग तथा ज्ञानविधि

समय-स्थल-संपर्क संबंधी जानकारी तय होने के बाद अगले अंकों में दी जाएगी।

'दादावाणी' पत्रिका के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी ऑर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क: अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद (दादा दर्शन): (079) 27540408,
वडोदरा (दादा मंदिर): (0265)2414142, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123,
गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885
यु.के.: +44-7956476253, यु.एस.ए.: +1-877-505-3232, आस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई की निश्रा में अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर

सत्संग शिविर : दि. १७ मई, सुबह १० से १२ (वीसीडी सत्संग), शाम ४-३० से ७

दि. १८ से २० मई, सुबह ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७ (दि. १९ शाम को ज्ञानविधि)

ज्ञानविधि : दि. १९ मई (शनिवार), दोपहर ३-३० से ७

महुडी-तारंगा यात्रा : दि. २१ मई (सोमवार) -सुबह से शाम तक

सूचना : यह शिविर केवल गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। इस शिविर के लिए २२ अप्रैल २०१२ तक रजिस्ट्रेशन होगा। निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से अपने पास के सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करवाएँ। यदि आपके नजदीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें। यदि आप यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट २२ मई का लें।

- अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन से अडालज त्रिमंदिर पहुँचने के लिए सीटी बस 89/1 और ओटो रिक्शा, टेक्सी मिलेगी।

अडालज	: (079) 39830400	दिल्ली	: 9310022350	मुंबई	: 9821996663
भोपाल	: 9425676774	जलंधर	: 9814063043	पूणे	: 9860797920
इन्दौर	: 9893545351	पाली	: 9461251542	हैद्राबाद	: 9989877786
जबलपुर	: 9425160428	जयपुर	: 9351408285	बंगलूर	: 9590979099
भिलाई	: 9827481136	रायपुर	: 9329644433	चेन्नई	: 9380159957
पटना	: 9431015601	अमरावती	: 9823127601	कोलकता	: 033-32933885

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'सोहम' पर हर रोज़ दोपहर १-३० से २, शाम ६-३० से ७ (रिपीट) (हिन्दी में)
 - ✦ 'दूरदर्शन-गिरनार' पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० और दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
 - ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० और शाम ५ से ५-३० (गुजराती में)
 - ✦ 'दूरदर्शन-सप्तगिरि' पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (तेलुगु में) - नया
- USA**
- ✦ 'TV Asia' पर सोम से शुक्र, सुबह ७-३० से ८ (गुजराती में)
- USA-UK**
- ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)
- Europe**
- ✦ 'वीनस' (स्काय प्लेटफार्म-चैनल 805) पर हर रोज़ रात १० से ११ (हिन्दी में)
- ✦ समग्र विश्व में (भारत और यु.एस.ए. के अलावा) सोनी टीवी पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'दूरदर्शन' पर हर बुध-गुरु-शुक्र सुबह ९ से ९-३० (हिन्दी में) - नई दृष्टि, नई राह
 - ✦ 'आस्था' पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-५० (हिन्दी में)
 - ✦ 'दूरदर्शन' डीडी-गिरनार पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
 - ✦ 'दूरदर्शन-सहाद्री' पर सुबह ७-३० से ८ (सोम-मंगल-गुरु-शनि), सुबह ७-१५ से ७-३० (बुध-शुक्र) (मराठी में)
 - ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० और शाम ८-३० से ९ (गुजराती में)
- ✦ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) 'SAHARA ONE' पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
- USA-UK**
- ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

अप्रैल २०१२
वर्ष - ७, अंक - ६
अखंड क्रमांक - ७८

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2012
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

खुद की प्रकृति को भी शुद्ध करनी पड़ेगी

आप (आत्मज्ञान प्राप्त होने के बाद) शुद्धात्मा हो गए, पुरुष (आत्मा) हो गए, इसलिए मोक्ष के लिए लायक हो गए किन्तु (ऐसे ही) मोक्ष में नहीं जा सकते, क्यों? यह प्रकृति क्या कहती है, पुद्गल क्या कहता है कि आप तो शुद्ध हो गए, लेकिन हम भी शुद्ध ही थे, आपने हमें बिगाड़ा है। इसलिए हमें भी शुद्ध कर दो वापस, तो ही आप मुक्त हो सकोगे, वना मुक्त नहीं हो सकोगे नियम से! यानी हमें उसके दाग-बाग धो कर शुद्ध कर दे तो वे चले जाएंगे। शुद्ध किए कि चल दिए। प्रतिक्रमण करते हैं तब शुद्ध होकर चले जाते हैं। अब हम तो शुद्ध हो गए, लेकिन इस प्रकृति को शुद्ध न करे तब तक हमारी जिम्मेदारी है न?

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.